अग्रोहा धाम

कविताओं में

सम्पादक

डॉ० कमल किशोर गोयनका

अग्रोहा धाम

कविताओं में

अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा-१२५०४७, हिसार (हरियाणा)
की मासिक पत्रिका, 'अग्रोहा धाम' में प्रकाशित
कविताओं का प्रथम संकलन

अग्रोहा विकास ट्रस्ट, अग्रोहा - १२५०४७, हिसार (हरियाणा) के लिए
नटराज प्रकाशन, दिल्ली-११००५२ द्वारा प्रकाशित

अग्रोहा धाम

कविताओं में

सम्पादक

डॉ० कमल किशोर गोयनका

पीएच० डी०, डी०लिट्०

नटराज प्रकाशन

दिल्ली-११००५२

पुस्तक का शीर्षक : अग्रोहा धाम : कविताओं में ; **सम्पादक** : डॉ० कमल किशोर गोयनका, पीएच० डी०, डी०लिट्० ; **प्रकाशक** : नटराज प्रकाशन, ए-९८, अशोक विहार, फेज प्रथम, दिल्ली-११००५२ ; **आवरण चित्र संकल्पना** : स्वर्गीय हरि किसन जी अग्रवाल (संस्थापक : दैनिक 'राष्ट्रदूत', नागपुर ; प्रथम उपमहामंत्रीः अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन) ; **सौजन्य** : श्री मोतीराम जी बाजोरिया, नागपुर एवं श्री दुर्गाप्रसाद अग्रवाल, नागपुर

फोन : ७११७१५३, **टेलैक्स** : ३१६ ५५०३ FXRS IN ; **फैक्स** : ९१-११-७२३-४५४४

संस्करण : प्रथम, अक्टूबर, १९९२ : **मूल्य** :

Title of the book : AGGROHA DAHM : KAVITAON ME ; **Edited by :** Dr. Kamal Kishore Goyanka, Ph.D., D. Litt. ; **Published by :** Natraj Prakashan, A-98, Ashok Vihar, Phase-I, Delhi-110052 ;

Phone : 7117153, **Telex :** 316 5503 FXRS IN ; **Fax :** 91-11-723-4544 ;

Laser Typesetter ; Indu Prakashan, 3776/4, Chawri Bazar (Charkhe Walan) Delhi-110006,; **Printed by :** Vishal Printers, 1/11972-H, Ulthanpur, Navin Shahdara, Delhi-110032. **Price :**

भूमिका

जीवन में संयोग कई बार महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। अग्रोहा विकास ट्रस्ट के श्री नंद किशोर जी गोयनका से मेरी भेंट भी इसी प्रकार की थी। मेरे मित्र डॉ० भुवनेश्वर गुरुमैता ने मुझे हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद पर भाषण देने के लिए ९-१० अगस्त, १९९२ को हिसार आमंत्रित किया तो पहली गोष्ठी की अध्यक्षता श्री नंद किशोर जी गोयनका ने की और वहीं मेरी उनसे पहली बार भेंट हुई। गोयनका जी के हाथों सम्मानित होकर मुझे विशेष सुख मिला, क्योंकि प्रेमचंद के साथ गोयनका परिवार का कुछ ऐसा अटूट रिश्ता है जो उनके देहांत के लगभग ५०-५५ वर्षों बाद तक बना हुआ है। प्रेमचंद जब मद्रास गये थे, तब श्री रामनाथ गोयनका ('इंडियन एक्सप्रेस' के संस्थापक) ने तथा जब वे दिल्ली आये तब मारवाड़ी लाइब्रेरी, दिल्ली के संस्थापक श्री केदारनाथ गोयनका ने उनका स्वागत किया था और उनके सम्मान में गोष्ठी आयोजित की थी। अब प्रेमचंद-साहित्य पर शोध-कार्य करने पर श्री नंद किशोर जी गोयनका मुझे अपना स्नेह-आर्शीवाद प्रदान कर रहे थे।

हिसार में कार्यक्रम के बाद श्री नंद किशोर जी गोयनका मुझे अग्रोहा धाम दर्शन कराने के लिए ले गये। साथ में डॉ० भुवनेश्वर गुरुमैता भी थे। अग्रोहा धाम के विकास तथा राष्ट्रीय तीर्थ स्थान बनाने के संकल्प और इसके लिए प्रयत्नशील व्यक्तियों की मुझे जानकारी रही है तथा उससे सम्बद्ध कुछ प्रतिष्ठित सज्जनों से बातचीत भी हुई है, परन्तु अग्रोहा धाम को देखने का यह मेरा पहला ही अवसर था। श्री नंद किशोर जी गोयनका ने बड़े स्नेह से अग्रोहा धाम दिखाया तथा भावी योजनाओं का परिचय भी दिया। सबसे पहले मैंने अग्रकुल संस्थापक महाराजा अग्रसेन तथा कुलदेवी महालक्ष्मी को प्रणाम किया तथा फिर उस टीले को, जिसके अन्दर महाराजा अग्रसेन की राजधानी के अंश दबे पड़े हैं तथा जो अग्र-बन्धुओं को ललकार कर कह रहे

हैं कि ज़मीन में दबे रत्नों को निकालो तथा दुनिया को बता दो कि महाराजा अग्रसेन ने किस प्रकार मानव-जाति एवं सभ्यता का विकास किया था और किस प्रकार अग्र जाति श्रेष्ठता एवं उच्चता तक पहुँचकर सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का संकल्प लेकर चल रही थी। हमारे पास श्री बालेश्वर अग्रवाल, डॉ० स्वराज प्रकाश गुप्त जैसे विद्वान एवं इतिहासवेत्ता हैं तथा देश से अन्य विद्वान भी साथ आ सकते हैं, पर आज इस टीले में छिपी-दबी अग्र-संस्कृति को निरावृत्त करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह संस्कृति मात्र अग्रवालों की संस्कृति न थी, बल्कि यह भारत की संस्कृति थी। श्री नंद किशोर जी गोयनका ने बताया कि अग्रोहा विकास ट्रस्ट के कार्यों में इस टीले की खुदाई तथा उससे प्राप्त वस्तुओं का संग्रहालय बनाने की योजना भी है। मेरे विचार में यह ऐसा महत्त्वपूर्ण कार्य है कि केन्द्रीय एवं राज्य सरकार को साथ लेकर शीघ्र ही इसे आरम्भ कर देना चाहिए।

श्री नंद किशोर जी गोयनका से मिलने एवं उनसे बातचीत का एक सुखद परिणाम यह पुस्तक भी है, जो अब पाठकों के हाथ में है। अग्रोहा विकास ट्रस्ट की मासिक पत्रिका 'अग्रोहा धाम' के अंक उन्होंने मुझे दिये थे। मैंने जब इसके अंकों को देखा तो मुझे इसकी प्रसन्नता हुई कि पत्रिका के सम्पादक तथा प्रकाशकों ने आरम्भ से ही पत्रिका में कविताओं को स्थान दिया है तथा अब तक लगभग १२५ कविताएँ प्रकाशित हो चुकी हैं। इससे एक निष्कर्ष निकलता है कि अग्र-बन्धु मात्र व्यापारी नहीं हैं, वे काव्य-सर्जक भी हैं, वे सम्वेदनशील हैं और भावों की अभिव्यक्ति में कुशल हैं। 'अग्रोहा धाम' पत्रिका में जिन अग्र-बन्धुओं की कविताएँ छपी हैं, मेरे विचार में वे उनकी सहज एवं निश्छल अभिव्यक्तियाँ हैं जो बिना प्रयास के शब्दों का रूप लेती रही हैं। निश्चय ही, ये कवि जयशंकर प्रसाद, पंत, निराला आदि की कोटि के नहीं हैं और मैं सोचता हूँ, उनका ऐसा कोई दावा भी नहीं हैं, परन्तु मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि यदि ये कवि निरन्तर काव्य-साधना करते रहें तथा बराबर लिखते रहें तो अवश्य ही कुछ उस कोटि तक पहुँच सकते हैं। कविता साधना चाहती है और इससे ही उसकी सिद्धि होती है।

यहाँ इस पुस्तक में 'अग्रोहा धाम' मासिक पत्रिका में प्रकाशित कविताओं को संकलित करके प्रस्तुत किया गया है तथा इसका ध्यान रखा गया है कि यहाँ वे ही कविताएँ दी जायें जो महाराजा अग्रसेन, अग्रवाल समाज तथ अग्रोहा धाम से सम्बन्धित हों या अग्रवाल समाज की समस्याओं का चित्रण करती हों। पुस्तक की पृष्ठ-सीमा को देखते हुए मुझे चाहकर भी कुछ कविताओं को छोड़ना पड़ा है, परन्तु मैंने इसका प्रयत्न किया है कि उपलब्ध अंकों में से वे सभी कविताएँ आ जायें जो अग्रोहा धाम तथा अग्रवाल समाज पर लिखी गयी हैं। ये कविताएँ अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण हैं। सर्वप्रथम, इन कविताओं में अग्रवंश के जनक महाराजा अग्रसेन का गुण-गान है। कवियों ने उन्हें 'राम राज्य के अनुयायी', 'युग-पुरुष', 'ज्योति पुरुष', 'महादानी', 'मानवता के सर्जक', 'लोकतंत्र एवं समाजवाद के जनक', 'सहयोगवाद के प्रणेता', आदि अनेक विशेषणों से विभूषित किया है। वास्तव में, महाराजा अग्रसेन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना महान था कि कुछ शब्दों में उन्हें अभिव्यक्त करना सम्भव नहीं है, लेकिन इतना अवश्य ही स्पष्ट हो जाना चाहिए कि वे प्राचीन भारत में ऐसी अग्र-संस्कृति के संस्थापक थे, जिसमें सभी व्यक्तियों को समान अवसर थे तथा जहाँ निर्धन को सम्पन्न बनाया जाता था और इस के लिए समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपना अंशदान-एक ईंट एक रुपये के रूप में करता था। इतना विकसित एवं व्यावहारिक सहयोगवाद तथा समतावाद तो साम्यवादी देशों में भी नहीं रहा। इस दृष्टि से महाराजा अग्रसेन प्राचीन काल में उत्पन्न होकर भी आधुनिक-चेतना सम्पन्न व्यक्ति थे जो मानव-मात्र के विकास के लिए समर्पित थे।

हम ऐसे आधुनिक-चेता, मानवतावादी एवं लोकतंत्रवादी सम्राट् की सन्तानें हैं, अतः हमारा दायित्व अन्यों की तुलना में अधिक है। यह ठीक है, कुछ कवियों को अग्रवाल होने पर गर्व है तथा यह भी ठीक है कि अग्रवाल जाति परहित कार्यों में तथा लोक-मंगल के कार्यों में सदैव प्रथम पंक्ति में रही है। भारत में कोई ऐसा शहर नहीं होगा, जहाँ अग्रवाल जाति ने धर्मशाला, चिकित्सालय, बरात-घर, पुस्तकालय, विद्यालय आदि की स्थापना नहीं की हो

तथा देश पर विपत्ति के समय भी अनेक प्रकार से सहायता करने के लिए भी यह जाति सदैव आगे रही है, परन्तु हमें अपने समाज की बुराइयों पर भी दृष्टि रखनी है। आज समाज में ऊँच-नीच का भेद, धन की प्रभुता, भाई-चारे की कमी तथा दहेज का दानव अपना कुप्रभाव दिखा रहा है। अतः यह आवश्यक है कि हम इससे मुक्त हों तथा पुनः महाराजा अग्रसेन की कल्पना के समाज का निर्माण करें।

इन कविताओं में, कवियों ने बार-बार अग्रोहा धाम की ऐतिहासिकता की चर्चा की है तथा इसके विकास के लिए संकल्प लेने का आग्रह किया है। यह सर्वथा उचित है और आवश्यक भी, क्योंकि इस ऐतिहासिक राजधानी का पुनर्निर्माण करके जहाँ हमें महाराजा अग्रसेन के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करनी है, वहीं हमें अग्रवाल-समाज का तीर्थ बनाते हुए इसे इक्कीसवीं शताब्दी की राजधानी भी बनाना है। मेरा अभिप्राय यह है कि बीसवीं शताब्दी के अंत तक अग्रोहा धाम का पूर्ण रूपेण विकास हो जाना चाहिए, जिससे इक्कीसवीं शताब्दी में यह सारे देश का केन्द्र बन सके। यह कार्य कठिन नहीं है। हमारे देश में असंख्य धनी-मानी अग्रवाल-बन्धु हैं। वे व्रत लें कि प्रत्येक वर्ष इस महायज्ञ में अपनी कुछ-न-कुछ आहुति अवश्य ही देंगे। आप देखेंगे कि तब अग्रोहा धाम तीर्थ-स्थल तो होगा ही, देश का एक सुन्दरतम स्थल भी होगा, जहाँ रोज़ श्रद्धालु आयेंगे और रोज़ मेला होगा तथा जहाँ से अग्र-संस्कृति की सुगन्ध इन अग्र-यात्रियों के द्वारा देश-विदेश में व्याप्त हो जायेगी।

ये कविताएँ महाराजा अग्रसेन की उपलब्धियों का आख्यान करती हैं, हमें प्रेरणा देते हुए अग्रवाल समाज की उन्नति तथा अग्रोहा धाम के विकास का संकल्प देती हैं तथा सामाजिक बुराइयों को त्यागने के लिए प्रेरित करती हैं। यद्यपि इन कवितों में विषयगत आवृत्ति मिलेगी, लेकिन प्रत्येक कवि की कहने की अपनी शैली है तथा दूसरे से उसकी भिन्नता स्पष्ट दिखायी देती है। इन कविताओं के रचयिता अधिकांश अग्रवाल बन्धु हैं, परन्तु कुछ कविताएँ अन्य बहन-भाइयों ने भी लिखी हैं, जो विशेष रूप से स्वागत-योग्य है। यहाँ कविताएँ कवियों के नामों से अकारांत पद्धति से दी गयी हैं तथा जिस नाम

से प्रकाशित हुई हैं, उन्हीं नामों से प्रस्तुत की गयी हैं। यह सम्भव है कि एक कवि का नाम दो रूपों में छप गया हो, परन्तु यह मेरी विवशता थी, क्योंकि 'अग्रोहा धाम' पत्रिका में इसी रूप में प्रकाशित हुई हैं। फिर भी, किन्हीं त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ।

अन्त में, इस पुस्तक के द्वारा हम अपने कवियों को पुनः अग्र-समाज के सम्मुख प्रस्तुत कर रहे हैं, जिससे वे इन कविताओं का रसास्वादन ही न करें, बल्कि अग्रोहा धाम तथा अग्रवाल समाज के लिए कुछ करने का संकल्प भी लें। यदि ये कविताएँ इस दृष्टि से कुछ भी कर सकीं तो हम अपने प्रयास को सार्थक मानेंगे। यह पुस्तक पाठकों तक पहुँच सकी, इसका श्रेय श्री नंद किशोर जी गोयनका को है, जिन्होंने मेरे प्रस्ताव को स्वीकार करने की कृपा की।

इस पुस्तक के सम्बन्ध में पाठकों की प्रतिक्रियाओं एवं सुझावों की मैं प्रतीक्षा करूँगा। इस क्रम को मैं आगे बढ़ाना चाहता हूँ। यदि पाठक मुझे अग्रवाल समाज की ओर से प्रकाशित अन्य पत्र-पत्रिकाएँ उपलब्ध करा दें तो इसी प्रकार के अन्य काव्य-संकलन प्रकाशित किये जा सकते हैं। हमारे अग्र-कवियों की रचनाएँ बराबर पुस्तकाकार रूप में आते रहनी चाहिएँ तथा इसके लिए सभी अग्र-बन्धुओं को मेरा पूर्ण सहयोग रहेगा।

ए-९८, अशोक विहार, फेज प्रथम,
दिल्ली-११००५२
११ अक्टूबर, १९९२

डॉ० कमल किशोर गोयनका
पीएच०-डी०, डी० लिट्०

अनुक्रम

१.	**अज्ञात कवि** : स्वीकार करो सबका प्रणाम	१३
२.	**अज्ञात कवि** : अग्रसेन : एक व्यक्तित्व	१४
३.	**अनन्त राम हलवाई** : अग्रोहा का नव-विकास हो	१५
४.	**अल्हड़ गोण्डवी** : जन्म-भूमि निर्माण करेंगे	१७
५.	**आशीष अग्रवाल** (आयु आठ वर्ष) : प्रार्थना	१८
६.	**उदय करण 'सुमन'** : ज्योति-पुरुष को नमस्कार	१९
७.	**श्रीमती कमला टांटिया** : आह्वान	२०
	: अग्रवंशी एक रहें	२१
८.	**कल्याणमल गोयल 'झण्डेवाला'** : अग्रसेन-पथ	२२
९.	**काका हाथरसी** : अग्रवाल महिमा	२३
	: अग्रवाल : अग्रासन	२४
	: जयघोष	२४
१०.	**डॉ० केशव कल्पान्त** : अग्रसेन-स्तुति	२५
११.	**कृष्ण मित्र** : महाराज अग्रसेन के प्रति	२६
१२.	**कृष्णमुरारीलाल अग्रवाल** : अग्र जनपद की कथा	२८
१३.	**खुशहाल चन्द्र आर्य** : अग्रवालों की गौरव-गाथा	२९
१४.	**गुणसागर शर्मा 'सत्यार्थी'**: अग्रोहा का नवोन्मेष	३०
	: आरती	३२
१५.	**गुलाब खेतान** : तेरी ज्योति आलोकित रखेंगे	३३
१६.	**गोपीराम कोकड़ा** : हम अग्रसेन के वंशज	३४
	: अग्रोहा-दर्शन	३५
	: अग्रोहा हमारा तीर्थ	३६
	: एक आह्वान	३७
	: स्वप्न में अग्रोहा धाम	३८
१७.	**चन्द्र प्रकाश बंसल 'भारती'** : धूल नहीं यह तो चन्दन है	३९
१८.	**जगदीश अग्रवाल**:ओ अग्रोहावासियो	४१
१९.	**ज्ञान चन्द गोयल** : महाराज अग्रसेन जी की आरती	४२

२०. **डी० के० गर्ग** : अग्रोहा बने तीर्थ नाथ ४३
२१ **त्रिलोक गोयल** : वर्तमान से हारा हुआ अतीत ४४
: इंसानों की बात करें हम ४६
२२. **दुलीचन्द अग्रवाल** : हे पुण्य भूमि तुमको प्रणाम ४८
: पाँचवा धाम ४९
२३. **दुलीचन्द 'शशि'** : अग्रोहा-वंदना ५०
: अग्रोहा पुनर्निर्माण महायज्ञ ५२
: ओ अग्र बन्धुओ ! उठो, उठो ५४
: अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल ५६
: मंजिल दूर नहीं है ५७
२४. **देशबन्धु आर्य**:अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल ६०
२५. **नरेश कुमार गोयल**:अग्रोहा विकास ६१
२६. **नारायण दास अग्रवाल'वीर'** : मैं अग्रवाल हूँ ! ६२
२७. **प्रो० निडर** : महाराज अग्रसेन : श्रद्धा-समुन ६४
२८. **पी० पी० सिंगला** : अग्रवालों की दानशीलता ६५
२९. **बाबूलाल** : श्री अग्रसेन चालीसा ६६
३०. **बी०डी० गुप्ता** : अग्रोहा : जीवंत धाम हमारा है ६८
३१. **भरत कुमार जगदीश प्रसाद अग्रवाल**
: तीर्थ वहाँ होगा और वरदान भी होगा ६९
३२. **मुंशीलाल अग्रवाल** : झंडा गान ७०
३३. **डॉ० मोहनलाल गुप्त** : अग्रसेनो जयति ७१
: हमें बुलाया है ७२
३४. **मोहनलाल अग्रवाल** : दानव दहेज अभिशाप महा ७३
३५. **मोहनलाल एम० अग्रवाल** : समूह विवाह की जलती रहे मशाल ७४
३६. **कुमारी रजिया सुलताना** : अग्रोहा : मेरी पुण्य भूमि ७५
: एक चाह ७६
३७. **राघवेन्द्रलाल अग्रवाल** : युगबोध ७७
: उद्‌बोधन ७८
: दहेज लेना पाप है ७९
: कुछ करिश्मा कर दिखाएँ ८१
३८. **कुमारी राज गोयल** : मौन प्रश्न ८२

३९. राजेन्द्र अग्रवाल : अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ? ८३
४०. रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल : उल्टी रीत हटाऊँगी ८५
४१. रामेश्वर प्रसाद ताराचन्द : अग्रसेन भगवान ८६
: सुनो-सुनो अग्रसेन पर वार ८७
४२. रूपेश बंसल : कैसे गाऊँ गीत बहार के ८९
४३. ललित कुमार अग्रवाल : अग्रोहा-धाम ९१
: अग्रोहा की महिमा ९२
: हे अग्रसेन तुम्हें मेरा प्रणाम ९३
४४. विष्णु चन्द्र गुप्ता : हम अग्रोहा तीर्थ बनावें ९४
४५. व्यास चन्द अग्रवाल : अभिलाषा ९६
४६. डॉ० शिवशंकर गर्ग : अग्रोहा को तीर्थ बना लें ९७
: दहेज कलंक को दूर करो ९८
: अग्रवाल ध्वज-गीत १००
: शीला का शील १०१
: जय-जय अग्र नरेश ! १०४
४७. श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल' : अग्र संगम-पर्व १०६
: महाराज अग्रसेन की वंदना १०७
: अग्रकुल ललनाओं से निवेदन १०८
: होली की रोली १०९
४८. श्रीकृष्ण गोयल : अग्रोहा पद यात्रा हेतु ११०
४९. संजय कुमार गर्ग : दहेज-दानव १११
५०. सत्य प्रकाश 'बजरंग' : हे अग्रसेन तुमको प्रणाम ११३
५१. श्रीमती सरोज गुप्ता : अग्र बन्धुओ उठो ११४
५२. सुनयना गर्ग : आओ मिलकर करें सुधार ११६
५३. सुरेशचन्द जिन्दल : भेद-भाव को मिटाइये ११७
५४. डॉ० स्वराज्यमणी अग्रवाल : कविता लिखी नहीं जाती ११९
५५. हरिशंकर (बमबम) अग्रवाल : जय-जय अग्रसेन हमारे १२१
५६. हरीश लोहिया : अग्रोहा धाम १२३
५७. कवि-परिचय १२४

स्वीकार करो सबका प्रणाम

अज्ञात कवि

है नमन तुम्हें, हे युग दृष्टा। हे प्रकृति देव, हे सृष्टिपूत।
हे पुण्य पवन से वेगवान, हे भारत माता के अग्रदूत।
हे शांति-धाम, हे वीर श्रेष्ठ। हे पौरुष युग की अमर देन।
वाणी-वदंन स्वीकार करो, हे महाराज श्री अग्रसेन।

धरती के कष्ट छुड़ाये सब, वीरोचित ऋषि सम तेजवान,
भारत का जन-जन न्यौछावर, हे जननि जनक के प्रबल प्राण।
वसुधा के कोटि-कोटि कण्ठों में, गूँज रहे ये अमर बैन,
हे धरापुत्र, हे महाराज अग्रसेन, तुम्हें शत-शत प्रणाम।

क्या कलम लिखे, क्या शब्द ढले, अक्षर भी क्षर हो जाते हैं,
तुमसे मानव, अवतार रूपधारी ईश्वर हो जाते हैं।
यह जाति और पूरा समाज, ऋण नहीं चुका पायेगा,
चरणों में शीश झुका करके, मानव कृतार्थ हो जायेगा।

हे वीर ! हे शांतिदूत ! हे रामराज्य के अनुयायी,
तुमने अपना सर्वस्व देकर, मानवता की डोर थमायी।
श्रद्धांजलि अर्पित चरणों में, श्रद्धा के सुमन समर्पित हैं,
स्वीकार करो सबका प्रणाम, सेवा में सब कुछ अर्पित है।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९१)

अग्रसेन : एक व्यक्तित्व

अज्ञात कवि

सारे भारत में जगह-जगह
हर वर्ष-सदा ही
आश्विन शुक्ल प्रतिपदा को हम
अग्रसेन का वंदन करते आये हैं।

वह अग्रसेन
युग-पुरुष एक
है जिसका नाम स्वर्णाक्षरों में अंकित
वह अग्रसेन
जो एक महान विचारक था,
धार्मिक प्रवृत्ति का था प्रतीक।

लेकिन है उदय-अस्त दोनों पूरक भी एक दूसरे के
सुख-दुख से भी नाता है
है आदि जहाँ-है अन्त वहीं
जो आता है-वह जाता है
फिर एक रोज़ वह चला गया
पर दीप अभी तक झिलमिल है
जो जला गया।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९१)

अग्रोहा का नव-विकास हो

अनन्त राम हलवाई

यह अखिल भारतीय अग्रोहा ट्रस्ट का नारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावन लक्ष्य हमारा है।।

सुभाष गोयल, सत्य के प्रकाश पावन
श्रम निष्ठा के, श्री गोयल स्वरूप हैं।
कोषाध्यक्ष रामरिछपाल जी,
संगठन एकता का रूप हैं।।

तन-मन-धन से अर्पित, जीवन इनका सारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावन लक्ष्य हमारा है।।

अग्रोहा एक्सप्रेस चल रही, राजेन्द्र जी के गुणगान से,
खान-पान व्यवस्था हो रही, गोपीराम जी के ध्यान से।
विकल जी की सुन्दर व्यवस्था, सब यात्रा कर रहे बड़े शान से,
भगवान दास जी, कन्हैयालाल जी, सबको खिलाते-हँसाते बड़े प्यार से।।

नीरजा, ऊषा और जमुना जी, महिलाओं के संगठन का नारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावन लक्ष्य हमारा है।।

श्री गोयनका जी ने जागृत किया, अपने लेख-विचारों से,
कानबिहारी जी ने मनोरंजन करवाया, अपने अनुपम गीतों से।
सुन्दर निवास व्यवस्था हुई, श्री बिसंभर जी के सहयोग से,
अग्रोहा एक्सप्रेस भी दुल्हन बन गई, श्री कन्हैयालाल जी के प्रयासों से।।

बन जाये अग्रोहा अग्रवालों की राजधानी, यही सभी का नारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावन लक्ष्य हमारा है।।

सम्पूर्ण महाराष्ट्र में, श्री अग्रसेन जी की ज्योति जलाई है,
सामूहिक विवाह कराकर, समाजवाद की चौधरी जी ने याद दिलाई है।
अग्रोहा अग्रवालों के उत्थान के, सहयोग में जिनका नाम है,

ऐसी उन डॉ० स्वराज्यमणी जी को, हलवाई का शत-शत प्रणाम है।।
हम सब संगठित होकर एक हों, यही सभी का नारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावल लक्ष्य हमारा है।।

क्षेत्रीय समिति नम्बर ६ के,
अध्यक्ष रमेश जी चतुर सुजान।
डालचन्द और बदलुराम जी,
संगठन के बने हैं प्राण।।

समाज उन्नति के पथ पर, चला कारवाँ सारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावन लक्ष्य हमारा है।

कर्मवीर जगदीश सचिव हैं,
यह कोषाध्यक्ष प्रेम सागर जी।
निष्ठावान, गुणी, दानी सब,
अग्रवाल सब भाई भी।

बिखरी कडियाँ फिर मिल जायें, प्रयत्न बड़ा ही प्यारा है।
अग्रोहा का नव विकास हो, पावन लक्ष्य हमारा है।।

(सितम्बर, १९८९)

जन्म-भूमि निर्माण करेंगे

अल्हड़ गोण्डवी

जन्म-भूमि निर्माण करेंगे,
मन में दृढ़ विश्वास है।।
हम हिन्दू हैं बड़े अणखीले,
पक्की सबकी आन है,
धर्म काम में जो जुट जाये,
हिन्दू वही महान है।
राम कार सेवा करने को,
लड़ेंगे जब तक श्वास है।। जन्म-भूमि. . .

कितनी भी बाधाएँ आयें
तनिक नहीं परवाह है,
कितनी भी विपदाएँ आयें
राम कार की चाह है।
हो बंगाली या पंजाबी,
सभी राम के दास हैं।। जन्म-भूमि. . .

मत समझो रामभक्त ये,
बिल्कुल भोले-भाले ही हैं,
याद करा दें दूध छठी का,
ऐसा साहस वाले भी हैं।
मत भूला कि रामद्रोही का,
निश्चित लिखा विनाश है।। जन्म-भूमि. . .

(फरवरी, १९९१)

ज्योति-पुरुष को नमस्कार

उदय करण 'सुमन'

हे अग्रवंश के ज्योति-पुरुष
जीवन ज्योति के स्नेह-सार
तुम अविचल
अविकल
निर्विकार
तुम को शत्-शत् नमस्कार।

तुम सप्त-सिन्धु
समता-सागर
चिर जयेतित
तुम धर्म-दिवाकर
दिव्य ज्ञान के प्रखर सूर्य तुम
आलोकित
महाप्रज्ञ
महाप्राण
तुम देहातीत
तुम निराकार
तुम को शत्-शत् नमस्कार !

तुम नर पुंगव
नारायण, तीर्थंकर
तुम पुरुषोत्तम-छविधाम
तुम प्रण-पालक
अजय
अमर
शोषित जन के उद्धारक
अविरल गुणधाम
जन-जन के तुम
हृदय-हार
तुम को शत्-शत् नमस्कार !

(दिसम्बर, १९९१)

आह्वान

श्रीमती कमला टांटिया

अग्रसेन प्रिय पूज्य हमारे पुनः लौटकर आओ।
अग्रोहा की धरती को फिर से आबाद कराओ।।

तू राजा था प्यारा वीर हमारा।
अग्रवाल की तू आँखों का तारा।
दुखी तेरी प्रजा, धीर बँधवाओ।
अग्रोहा की धरती को फिर से आबाद कराओ।।

अग्रवाल का तू था एक सहारा।
दानी, वीर, महादानी तू, जग ने तुम्हें पुकारा।
आकर फिर से अग्रोहा में वह कीर्ति फैलाओ।
अग्रोहा की धरती को फिर से आबाद कराओ।।

ये भारत सारा तुम्हें नमन करता है।
एक ईंट और एक रुपये का सिद्धान्त याद करता है।
इसी कीर्ति को आकर भारत में फिर से दोहराओ।
अग्रोहा की धरती को फिर से आबाद कराओ।।

आये नहीं अगर तुम तो हम रोते सदा रहेंगे।
झगड़-झगड़ कर आपस में ही बिखरे सदा रहेंगे।
अग्रसेन जी आकर हमको नई राह दिखलाओ।
अग्रोहा की धरती को फिर से आबाद कराओ।।

(मार्च, १९८९)

अग्रवंशी एक रहें

श्रीमती कमला टांटिया

अंग्रवंशी सब एक रहें, भाव अब नहीं रहें।
संघर्षों से दुःखी जगत को, मानवता की शिक्षा दें।
अग्रवंशी सब एक रहें . . .

अग्रोहाधाम है कुछ और नहीं, माँ श्री का है वास यही।
देव-देवियाँ रूप इसी का, सतियों का है स्थान यही।
नित इनके गुणगान करें, निज जीवन का उत्थान करें।
अग्रसेन की सीख समझ कर, जीवन जीना सीखें।
अग्रवंशी सब एक रहें . . .

अग्रवाल भटके बिछुड़े, हाथ पकड़ ले साथ चलें।
भोजन कपड़ा घर की सुविधा, विद्या सबको सुलभ मिले।
ईंट रुपया याद रहे, समाजवाद का पाठ पढ़ें।
एक लहू सबकी नस-नस में, अपने प्रण की रीति बनें।
अग्रवंशी सब एक रहें . . .

अग्रोहा उत्थान करें, भामाशाह-सा दान करें।
जन्म, विवाह, उत्सवों पर, अग्रोहा को याद करें।
एक बार अग्रोहा जाकर, अपना जीवन सफल करें।

अग्रसेन के अनुयायी, अग्रसेन को नमन करें।
अग्रवंश की विजय पताका, विश्व में लहराती रहे।
अग्रवंशी सब एक रहें. . .

(प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक, अक्टूबर, १९९०)

अग्रसेन-पथ

कल्याणमल गोयल 'झण्डेवाला'

अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें।
दृढ़ संकल्प हमारा है यह, स्वयं लक्ष्य को चल पायें।।
बाधाएँ कब रोक सकी हैं, बढ़ने वालों की राहें।
कौन दुराशा दबा सकी हैं, सबल चित्त की शुभ राहें।।
देख रही है राह सफलता, लक्ष्य गीत मिल सब गायें।
अग्रसेन के पावन-पथ पर, चलकर आगे बढ़ जायें।।
मेट सका है कौन कभी, अन्तः प्रेरित उत्साहों को।
बाँध सके कब धूमिल बन्धन, उमड़े हुये प्रवाहों को।।
'तरुण-चरण' चल पड़े जिधर ही लक्ष्य स्वयं दौड़ा आये।
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें।।
विकट विरोधों के कारण हम, बिल्कुल कभी न घबरायें।
पद-लिप्सा के प्रबल मोह में, कभी न हम पड़ने पायें।।
एकाचार-विचार एकता से, सब जन-मन खिल जायें।
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें।।
तोड़ गिरायें जीर्ण-शीर्ण सब रुढ़िवाद की दीवारें।
परम्परागत झूठी शानें, सभी मिटावें मतवारे।।
तो नवयुग के इतिहासों में, अपना नाम लिखा पायें।
अग्रसेन के पावन पथ पर, चल कर आगे बढ़ जायें।।
एक रुपया एक ईंट दें, अग्रसेन-पथ अपनायें।
साम्य और समता का दर्शन, जन-मन तक पहुँचा पायें।।
मिट जायेगी सभी विषमता, अग्रवंश को चमकायें।
अग्रसेन के पावन पथ पर, चलकर आगे बढ़ जायें।।

(सितम्बर, अक्टूबर, १९९१)

अग्रवाल महिमा

काका हाथरसी

प्रगतिशील हैं विश्व में अग्रवाल के पूत।
इनकी कर्मठ शक्ति को कूत सके तो कूत।
कूत सके तो कूत जानते ज्ञानी-ध्यानी।
महाराजा श्री अग्रसेन थे दानी-मानी।
उनके वंशज मिल-मालिक, बौद्धिक-व्यापारी।
दूर कर रहे उद्योगों द्वारा बेकारी।
क्रय-विक्रय की कला में अग्रवाल विख्यात।
वस्तु स्वदेशी, देश से, करते हैं निर्यात।
करते हैं निर्यात विदेशी मुद्रा पायें।
अर्थ जुटाकर अपना देश समर्थ बनायें।
शिक्षा-शास्त्री, प्रिंसीपल हैं, प्रोफेसर हैं।
न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर इंजीनियर हैं।
सूझ-बूझ के धनी यह, चलें प्रगति की राह।
जनसंख्या से लीजिए अग्रवंश की थाह।
अग्रवंश की थाह उच्च इनकी मर्यादा।
अग्रवाल भारत में दस करोड़ से ज्यादा।
समदृष्टा शासन का देखो न्याय निराला।
मन्त्री नहीं केन्द्र में कोई अग्गरवाला।
'काका' गये विदेश तब, दिखा सुखद यह सीन।
उच्च पदों पर हैं वहाँ अग्रवाल आसीन।
अग्रवाल आसीन कर्म कर्तव्य समझते।
भारतीय आगत आये, तो स्वागत करते।
कहं कका लिख रहे वही, जो देखा जैसा।
अग्रवाल नहीं मिले, विश्व में देश न ऐसा।

(फरवरी, १९८८)

अग्रवाल : अग्रासन

काका हाथरसी

संरक्षण का लाभ लें, सभी जातियाँ आज,
अग्रसेन के वंश को, करें नज़र-अंदाज।
करें नज़र-अंदाज, मिले बौद्धिक बहुतेरे,
राजनीति-उद्योगनीति के कुशल चितेरे।
अग्रवाल को अग्रपंक्ति में आगे लायें,
होय सफल सरकार प्रगति का शंख बजायें।
मुख्यमंत्री थे जहाँ श्री बनारसीदास,
कूटनीति "ताऊ" चली चली, खींचे अपने पास।
खींचे अपने पास, चाल यह निकली घटिया,
खड़ी हो गई हरियाणी ताऊ की खटिया।
वीं. पी. सिंह को न्याय-पथ पर चलना चाहिए,
'गुप्ता जी' को ऊँचा आसन मिलना चाहिए।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक' अक्टूबर, १९९०)

जयघोष

काका हाथरसी

अग्रसेन महाराज की करिए जै-जैकार,
दिन दूनी उन्नति करें, अग्रवाल परिवार।
अग्रवाल परिवार, बढ़ाओ भाईचारा,
सेवन करिए, अग्रोहा है तीर्थ हमारा।
जो इसके निर्माण कार्य में हाथ बटायें,
अग्र पंक्ति में होंय प्रतिष्ठित, आदर पायें।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९१)

अग्रसेन-स्तुति

डॉ० केशव कल्पान्त

अग्रसेन महाराज आपको
बारम्बार प्रणाम है।
जीवन भर जाति के हित में
किया आपने काम है।। बारम्बार प्रणाम है।

एक ईंट और एक रुपये का
दिया आपने मंत्र महान।
जनक आप हैं वैश्य जनों के
हम सब है प्यारी संतान।
फैल रही है कीर्ति तुम्हारी।
दश दिशा में अभिराम है। बारम्बार प्रणाम है।

महाप्रतापी, महादानी तुम,
ज्योति-पुंज थे प्रतिभा के
समाजवाद के कुशल चितेरे
प्रकाश-पुंज थे आभा के।
गौरव देकर के समाज को
किया यहाँ सत्काम है। बारम्बार प्रणाम है।

(जून, १९९२)

महाराजा अग्रसेन के प्रति

कृष्ण मित्र

आगे सबसे रहे सदा वो अग्रसेन कहलाता है,
अग्रसेन है इसीलिए युग-युग से पूजा जाता है।
वह अपने युग का निर्माता निर्माणों में व्यस्त रहा,
संघर्षों में तूफानों में लड़ने का अभ्यस्त रहा।

सामाजिक चेतन जगाकर जीना सीखा दिया उसने,
फटे दर्द को स्नेह सूत्र से सीना सिखा दिया उसने।
कमजोरों को मिला सहारा, आँसू को मुस्कान मिली,
भटके हुए पथिक को मंजिल की सच्ची पहचान मिली।

महापुरुष वह उसकी महिमा को कवि नित दोहराता है,
अग्रसेन है इसीलिये युग-युग से पूजा जाता है।
इस महान राजा के वंशज स्वाभिमान में पले मिले,
अग्रगण्य हैं सभी तरह से, देश-प्रेम में पले मिले।

व्यापारिक व्यवसायवृत्ति में निपुण निराले दक्ष मिले,
राजनीति में भी वे सबसे पढ़ने को प्रत्यक्ष मिले।
अग्रोहा की परम्परा को आज अगर मान्यता मिले,
है मुझे विश्वास देश का हर मुस्काता फूल खिले।

उसके अमर उसूलों का स्वर वातावरण सुनाता है,
अग्रसेन है इसीलिए युग-युग से पूजा जाता है।
एक ईंट के साथ एक मुद्रा जब अर्पित होती थी,

मानव के हित मानव की भावना समर्पित होती थी।

वह समाजवादी युग का पहला आवाहन लगता है,
अग्रसेन का युग के प्रति पहला सम्बोधन लगता है।
उसी त्याग की और तपस्या की अब बहुत जरूरत है,
वर्तमान युग में तो निकला इस का नया मूहुरत है।

लक्ष्मी-पुत्रो सुनो समय तुमको आवाज़ लगाता है,
अग्रसेन है इसीलिए युग-युग में पूजा जाता है।

(जुलाई, १९९२)

अग्र जनपद की कथा

कृष्णमुरालीलाल अग्रवाल

पंचनद का क्षेत्र मनोहर, जनपद एक अग्र था सुन्दर।
प्रजातत्र था शासन वहाँ पर, सुखी सभी नर-नारी घर-घर।।
अठारह कुल थे आग्रेय गण में, मुखिया जाते राज सदन में।
राज काज थे वे ही करते, उन्हें सभी थे राजा कहते।।
आग्रोदक राजधानी उनकी, इन्द्रपुरी-सी शोभा जिसकी।
एक लाख परिवार नगर में, सब सुविधाएँ डगर-डगर में।।
राजा मिल महाराजा चुनते, अग्रराज की पदवी देते।
'अग्रसेन' भी उनको कहते, मान 'पिता' सा सब जन देते।।
'अग्र' नगर में जो जन आता, ईंट-रुपया' हर घर से पाता।
दुःख-दरिद्र दूर हो जाता, बन्धु-प्रेम वह अद्‌भुत पाता।।

कृषि, व्यापार सभी जन करते, संकट में थे शस्त्र उठाते।
हँस-हँस समर-भूमि को जाते, दुश्मन को थे मार भगाते।।
चढ़ आया वह 'अग्रेय' गण पर; युद्ध हुआ था बड़ा भयंकर।।
अग्रवीर केसरिया घर-घर, लड़े समर में सब ही डटकर।
शेष रहा वह सह नहीं पाया, शोक वहाँ घर-घर में छाया।।
वैश्य कर्म में दुःख भुलाये, अग्रवाल वे ही कहलाये।।
बात पुरानी सब ही कहते,
विद्वान पाणिनी साखी देते।
उन जैसी हो उनकी सन्तानें,
'नूतन युग' तब हम को माने।।

(मार्च, १९९०)

अग्रवालों की गौरव-गाथा

खुशहाल चन्द्र आर्य

अग्रवालों का इतिहास भरा, प्रेम-भाई-चारै सै।
एक भाई उठ जाता था, सब भाईयों के सहारे सै।।

दीन-दुखियों की विपदाओं में, हम सदा तैयार रहे।
भूखे, प्यासे, नंगों को, हम देते दान हर बार रहे।।
बनाकर कुँआ, बापड़ी, धर्मशाला, करते हम
पर-उपकार रहें।
खोलकर स्कूल, कॉलेज, पाठशालाएँ, करते विद्या का
प्रसार रहें।।
कोई खाली नहीं जाता था, हमारे घर के द्वारे सै,
अग्रवालों का इतिहास भरा . . .

जब-जब देश पर संकट आया, तन, मन, धन दिया
अग्र-समाज।
देशभक्त लाजपतराय, लोहिया दिये, त्याग-मूर्ति
जमुनालाल बजाज।।
साहित्यकार भारतेन्दु, मैथिलीशरण दिये, जिन पर है
भारत को नाज़।
बड़े-बड़े उद्योग लगाकर समृद्ध किया देश व
समाज।।
अग्रवालों का बच्चा-बच्चा, देश-हित की बात विचार
सै,
अग्रवालों का इतिहास . . .

(अक्टूबर, १९८९)

अग्रोहा का नवोन्मेष

गुणसागर शर्मा 'सत्यार्थी'

अग्रोहा की पावन धरती जिसकी अमर कहानी है,
पुरावशेष कह रहे-यही तो अग्रसेन रजधानी है।
है पुनीत इतिहास यहाँ का-थे धार्मिक संस्कार यहाँ,
सब कोई सम्पन्न यहाँ था, ऋद्धि-सिद्ध थी जहाँ-तहाँ।

एक लाख परिवार प्रजाजन यहाँ चैन से रहते थे,
भक्ति-भाव से पालन करते-महाराजा जो कहते थे।
ऐसा पुण्य-प्रताप राज्य में बाहर से जन आते थे,
मुद्रा एक ईंट के संग वह घर-घर से पा जाते थे।

महाराज श्री अग्रसेन का यह उपहार अनोखा था,
हो लाखापति भवन बनाता, धन्धा करता चोखा था।
पुष्प-पल्लवित वही अभी तक वणिक समाज है जहाँ-तहाँ,
अग्रसेन की कृपा फलित है अग्रवाल है जहाँ-जहाँ।

देश-विदेशों में समृद्ध जो अग्रवंश फल-फूल रहा,
उनका उद्‌भव हुआ यहीं से वह अग्रोहा धाम रहा।
कण-कण में यश-गान गूँजता उस अतीत के वैभव का,
जिसके अवशेषों में अंकित साक्ष्य अग्रकुल उद्‌भव का।

अग्रवंश का मूल यही है गरिमामय निर्माण करें,
अनुपम तीर्थ बने, विकसित हो, आस्थायुत नव भाव भरें।
कुल देवी लक्ष्मी का पूजन इस मंदिर में करना है,

शक्ति-सरोवर में अवगाहन करके भव-नद तरना है।

यहीं सरस्वती संग लक्ष्मी अग्रसेन जी के दर्शन,
और विशाल भव्य प्रतिमा बजरंग बली नव आकर्षण।
शीला सती शील की प्रेरक हैं मंदिर बना विशाल,
शिल्प दृष्टि से दर्शनीय है, हों दर्शक देख निहाल।

फार्मेसी की उत्तम शिक्षा, भव्य पुस्तकालय होगा,
मेडीकल कॉलेज संग में बड़ा चिकित्सालय होगा।
हरे-भरे उद्यान मनोहर सुरभि सहज ही लुटा रहे,
योग और प्राकृतिक चिकित्सा हित सब साधन जुटा रहे।

प्रकृति यहाँ अंगड़ाई लेकर नव सौगात लुटायेगी,
नव परिवेश बने कुछ ऐसा नई जिन्दगी आयेगी।
दर्शन करने दूर-दूर से यात्री जब भी आयेंगे,
सुविधाओं से युक्त यहाँ आवास सुलभ वे पायेंगे।

तब अतीत का गौरव सचमुच स्मृतियों में आयेगा,
अग्रोहा का धाम जगत में अपना नाम कमायेगा।
अग्रसेन की पुण्य-भूमि को आगे आकर नमन करो,
अपना जन्म सुधारो आओ, जन-जन का कल्याण करो।

(मई, १९९०)

आरती

गुणसागर शर्मा 'सत्यार्थी'

ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
अग्रवंश कुल देवी, अग्रसेन ध्याता।।
अग्रोहा के धाम विराजी, यात्री जन आता।
आकर दर्शन पावे, ऋद्धि-सिद्ध पाता।।
ब्रम्हाणी, रुद्राणी, कमला, तू ही जग-माता।
सूर्य-चन्द्र नित ध्यावें, नारद ऋषि गाता।।
तू पाताल वसन्ती, तू ही शुभ दाता।
दुर्गा रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति दाता।।

कर्म-प्रभाव प्रकासिनि, जगनिधि की ज्ञाता।
जहाँ वास है तेरा, वहाँ पुण्य आता।।
तुम बिन यज्ञ न होवे मुक्ति न कोई पाता।
मोक्ष और धन वैभव, तुम बिन को दाता।।
आरती लक्ष्मी जी की, जो कोई नर गाता।
जीवन सुफल बनाकर, पार उतर जाता।।
जय लक्ष्मी माँ, जय अग्रोहा, कण-कण जय गाता।
शक्ति-सरोवर नहाकर, तब दर्शन पाता।।
ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
अग्रवंश कुल देवी, अग्रसेन ध्याता।

(जुलाई, १९९०)

तेरी ज्योति आलोकित रखेंगे

गुलाब खेतान

हे स्वर्णिम विश्व के चित्रकार, हम नमन तुमको करते हैं।
तेरी ज्योति अलोकित रखेंगे, हम आज ये प्रण करते हैं।।

हे अग्रसेन हे विश्वपूज्य, तू मानवता की आँखों का तारा।
सामाजिक न्याय का पथ तेरा, लगे हमें प्राणों से प्यारा।।

तेरे आदर्शों के सप्तक पर, बजता है हर मन का तारा।
इसके माधुर्य में खोता है, सुर नर जनमानस सारा।।

विश्व भाईचारे के रूप को, सहयोग का साथ दिया प्यारा।
सामाजिक एकता का मानदण्ड, आधार बना उसका सारा।।

तुम्हें स्नेहाशिष देता है, सूर्य-चन्द्र-धरा-नभ प्यारा।
तेरे आदर्श पथ पे बिखरा, 'गुलाब' सबका जीवन सारा।।

तेरी उज्ज्वल कीर्ति का, फैले चहुँ ओर उजियारा।
'समाज' विश्व का एक हो, यही रहेगा हम सबका नारा।।

(नवम्बर, १९९१)

हम अग्रसेन के वंशज

गोपीराम कोकड़ा

हम अग्रसेन के वंशज हैं
अग्रोहा दर्शन को आये।
कुल-देवी के दर्शन करके,
कृत-कृत्य आज हम हो पाये।।

कल शक्ति-सरोवर स्नान करें,
शक्ति का संचय कर पायें।
इस अग्रवाल जाति की हम,
ध्वजा पताका फहरायें।

कल पावन दिन आज़ादी का,
संकल्प करें अपने मन में।
इस भूमि की माटि को हम,
भारत भर में चमका पायें।

बोलें सब मिलकर जय भारत,
जय अग्रसेन महाराज कहें।
यह शक्ति हमें दो दया-निधे,
ध्येय-पथ पर हम बढ़ते जायें।

(अक्टूबर, १९८८)

अग्रोहा-दर्शन

गोपीराम कोकड़ा

पुण्य धरा है, पितृ भूमि है, अग्रोहा एक धाम।
अग्रवंश का हुआ जहाँ से, आविर्भाव अविराम।।

अग्रसेन की गौरव-गाथा, इस मिट्टी में सिमटी।
कुलदेवी माता लक्ष्मी भी, इसी भूमि में प्रगटी।।

अब तो जागो चिर निद्रा से, माँ के दर्शन कर लो।
अग्रसेन महाराज के पुण्य प्रताप से, गागर भर लो।।

अति विशाल है माँ की प्रतिमा, शक्ति-सरोवर चरण पखारे।
अभिषेक करो अपने-अपने कण-बिन्दु से, ऐ माँ के प्यारे।।

अग्रोहा का टीला और अवशेष हैं, तुम्हें पुकार रहे।
आई है प्राची की बेला, शुभ सगुन हैं, सब पुरवार रहे।।

हो जाओ अब उतिष्ठ तुम सब, एक सूत्र में बँध जाओ।
धो डालो मन का मैल, भेद-भाव सब बिसराओ।।

दूर क्षितिज की ओर निहारो, अग्रसेन महाराज खड़े।
सदा आरती नभ-मण्डल से, आशीर्वाद वरदान लिए।।

नव जागृति, नया अभियान, नव सृष्टि का निर्माण करो।
अग्रोहा आवाह्न कर रहा, नव शक्ति की हुंकार भरो।।

(नवम्बर, १९८८)

अग्रोहा हमारा तीर्थ

गोपीराम कोकड़ा

आज पुनः हम बम्बई वासी,
अग्रोहा दर्शन को आये।
हमने अपने मन में कितने,
आशाओं के दीप जलाये।
दीप-दीप से ज्योतिर्मय हो,
आलोकित हैं दीप शिखाएँ।
एक-एक मनके से जैसे,
बनती जाती हैं मालाएँ।
सब मनको में सूत्र एक है,
सब का एक सुमेरू वन्दन।
इसीलिये सब मालाओं का,
बनता जाता है गठ-बन्धन।
अग्रसेन महाराज सुमेरू,
अग्र-वंश यह सूत्र हमारा।
अग्रोहा की पावन धरती,
श्रद्धा केन्द्र और तीर्थ हमारा।
शक्ति-सरोवर की लहरों से,
गूँज रहा है यह नन्दन-वन।
कुल-देवी माता लक्ष्मी का,
करते जाते हैं अभिनन्दन।

(अक्टूबर, १९८९)

एक आह्वान

गोपीराम कोकड़ा

चलो चलें अग्रोहा की, माटी ने हमें पुकारा है।
पुरखों की इस पुण्य-भूमि का, कण-कण हमको प्यारा है।।

इस धरती में छुपा हुआ, गौरव का इतिहास है।
इसीलिये हम वन्दन करते, अग्रोहा सबसे न्यारा है।।

यहाँ के खण्डहर और चट्टानें, बीते युग की थाती हैं।
अग्रसेन की गौरव-गाथा, मूक वाणी में गाती हैं।।

न कोई ऊँचा न कोई नीचा, समाज समता का था साम्राज्य।
सत्य, अहिंसा, धर्म-परायण, सुख-समृद्धि का था राम-राज्य।।

इसीलिये तो दूर-दूर से, अग्रोहा सब आते थे।
पाकर ईंट और मुद्रा धन, सुख से वो बस जाते थे।।

सुख शांति से जीवन यापन, करते और कराते थे।
अग्रसेन के वंशज फिर वो, गौरव से कहलाते थे।।
चलो चलें अग्रोहा...।।

(नवम्बर, १९८९)

स्वप्न में अग्रोहा धाम

गोपीराम काकेड़ा

एक रात बहुत गहरी निद्रा में था,
अचानक दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ सुनाई पड़ी,
मैंने तुरन्त उठ कर दरवाज़ा खोला,
मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा,
ये तो स्वयं कुल-देवी महालक्ष्मी हैं,
मैं माता के चरणों में गिर पड़ा,
और प्रार्थना करने लगा,
अपनी अग्रवाल जाति के कल्याण की,
और अपने भारत देश के उत्थान की,
कुल-देवी ने अपनी भुजा उठाई,
और दूर क्षितिज की ओर इशारा किया,
मैंने देखा घोर बादल छट रहे हैं,
और उनमें से पहले धूमिल फिर बिल्कुल साफ,
अग्रोहा धाम का दृश्य दिखाई दिया,
वह रहा शक्ति-सरोवर,
और फिर अग्रोहा धाम का वह अति विशाल और भव्य मन्दिर,
मेरा हृदय गद्-गद् हो उठा,
और जब मैं चेत अवस्था में आया,
तो पाया यह मात्र एक स्वप्न था,
एक सुखद स्वप्न, एक अविस्मरणीय स्वप्न।

(अगस्त, १९९२)

धूल नहीं यह तो चन्दन है

चन्द्र प्रकाश बंसल 'भारती'

हमको धूल बुलाती अब तो,
धूल नहीं यह चन्दन है।
आओ इसको शीश चढ़ा लें,
ऐसा कहता मेरा मन है।।

अग्रोहा जो पितृ-भूमि है,
लगती है प्राणों से प्यारी।
अग्रवंश की जननी यह तो,
धर्म धुरन्धर है न्यारी।।

इस पर हमने राज किया है,
बता रही यह गाथा सारी।
अश्वमेघ इस पर ही कीन्हें,
राजन ने हिंसा टारी।।

किया चलन सहयोगवाद का,
ईंट-रुपये की रीति डाल दी।
सत्य-अहिंसा का व्रत लेकर,
जगती में डुग्गी पिटवादी।।

अग्रसेन की कर्म-भूमि यह,
उठी यहीं से जाति सारी।
तज डारी तलवार राव ने,
कर में कलम यहीं धारी।

जो भी निर्धन आया द्वारे,

उसकी करते इज्ज़त भारी।
देवराज ने कोप दिखाया,
भोले शिव ने विपदा टारी।।

शाह सिकन्दर चढ़ के आया,
उसने खाई मात करारी।
यह इतिहास बताता हमको,
महिमा इसकी अविरल भारी।।

अब इसके दर्शन करने हित,
निकल पड़े घर से नारी-नारी।
वीर भूमि है यह तो अपनी,
तीन लोक से मथुरा न्यारी।।

शक्ति-सरोवर का जल निर्मल,
महक रही अम्बुज गुल क्यारी।
अब तो दर्शन दे दो दाता,
अखियाँ निश-दिन रहत दुखारी।।

लघु भ्राता थे शूर-सेन से,
भगिनी कुमुद कुमारी प्यारी।
आस लगाये खड़ा 'भारती',
कुलदेवी लक्ष्मी महतारी।

(अक्टूबर, १९८९)

ओ अग्रोहावासियो

जगदीश अग्रवाल

ओ अग्रोहावासियो उठो-उठो
इतिहास बुलाता है देखो
गौरव गरिमा अतीत
'अग्रोहा' बुलाता है उठो-उठो।
फँस गया तुम्हारा जाति-प्रेम
उन्नति का मार्ग विशाल कहाँ ?
गठबंधित जिसकी जाति रही
है उनका ऐसा हाल यहाँ ?
यह बात नहीं की जाति अभी
हो गई सम्पदा से विहीन
हाँ किंतु पुरातन गरिमा से
हो रही जाति यह महाहीन।
है 'अग्र' जाति धनपति समाज
ऐसा सब कोई समझते हैं
इसके धन जन सबल से
अग्रवालों के नाम चमकते हैं।
जिसके बल पौरूष से देखो
इस अग्रवाल जाति की गिनती है
जिसके शासन में समाजवाद की
देखो आज चुनौती है।
उसी जाति में भरे पड़े हैं
कोटि-कोटि श्रीमान् आज
सत कार्यों के हित देते हैं
जो हृदय खोल कर दान आज।
उत्पादन की क्षमता वाले
है बहुत आज से काम करो
उद्योगों में धन का सुयोग दे
अग्रवाल जाति का नाम करो।
क्या हाल आज अग्रोहा का
जो धाम रहा अग्रवालों का
खण्डित अवशेष दिखाते हैं
ऊँची-ऊँची मीनारों का।
युग थोप रहा जिम्मेदारी
अग्रवाल कहाने वालों पर
दो ध्यान समय की माँगों पर
जाति के संकेत निशानों पर
इन नई-नई तस्वीरों में
हम रंग नहीं भर पायेंगे
तो निश्चित जानो अग्रोहा वासियो
हम पड़े यहीं रह जायेंगे।

(अगस्त, १९९२)

महाराज अग्रसेन जी की आरती

ज्ञानचन्द गोयल

जय-जय अग्रसेन महाराज, अग्रोहा नगर बसाने वाले।। (टेक)

सोहे सिर सोने का ताज, जड़ रहे हीरे और पुखराज।
उज्ज्वल हार रहे गल साज, शोभा अमित बढ़ाने वाले।।
करते रहे धर्मयुत राज, थे अति नीति निपूर्ण सरताज।
निर्मल यश रहा जग में गाज, जगत में प्यार बढ़ाने वाले।।

पाला नित अपना दस्तूर, देते ईंट द्रव्य भरपूर।
क्या कहूँ गाथा है मशहूर, जगत में प्यार बढ़ाने वाले।।
हम सब हैं तुम्हारी सन्तान, तुम्हारा करते सुयश बखान।
करते पूरा सुमरिन ध्यान, जय-जयकार मनाने वाले।।

तुम हो अग्र-जाति सिरमोर, तुम-सा नहीं जगत में और।
दर्शन करूँ नित उठ भौर, जीवन जोत जगाने वाले।।
तुम थे धर्मयुक्त महाराज, करते पूजा लक्ष्मी की दिनरात।
वंश में किया वैभव उजियार, अठारह गौत्र बनाने वाले।।

विनती करूँ अग्र महाराज, रख ले शरण पड़े की लाज।
गोयल बढ़े सभी सुख साज, दुविधा दूर भगाने वाले।।
जय-जय अग्रसेन महाराज जय जय...
हम हैं तेरी सन्तान, हम हैं तेरी सन्तान।

(अगस्त, १९९०)

अग्रोहा बने तीर्थ नाथ

डी. के. गर्ग

अग्रवाल सम्मेलन, भाईयो,
आप सभी की शान है।
स्वागताध्यक्ष श्री नन्द किशोर जी,
करते सभी का मान हैं।
मान्यवर श्री किशन मोदी ने,
जनता खूब जगाई है।
श्री अर्जुन दास डोरा वाले ने,
सत की ज्योति जलाई है।

श्री प्यारेलाल जी गोयल ने,
सभी की शान बढ़ाई है।
युवाध्यक्ष श्री सुभाष जी ने,
सच्ची लगन दिखाई है।
इन टीलों के नीचे ही,
अपने इतिहास हैं गडे हुए।
जहाँ सरस्वती की महिमा थी,
वही हैं खंडहर पड़े हुए।

अग्रवंश की युवा शक्तियो,
उठो-उठो कुछ करने को।
अग्रसेन प्रिय कॉलेज अपना,
इसका मान बढ़ाना है।
युवाध्यक्ष विकास ट्रस्ट के,
सदा फले फूलें दिन रात।
यही प्रार्थना है प्रभु से अब,
आओ कदम रखें सब साथ।

डी. के. गर्ग की यही कामना,
अग्रोहा बने तीर्थ नाथ।

(जनवरी, १९८९)

वर्तमान से हारा हुआ अतीत

त्रिलोक गोयल

जड़ हो या चेतन,
भाग्य सब का ही होता है,
कभी वह जानता है/कभी सोता है।

अग्रवंश के संस्थापक, छत्रपति अग्रसेन की राजधानी अग्रोहा—
जो कभी इन्द्रपुरी के समकक्ष थी,
कामधेनु थी, कल्पवृक्ष थी,
वह समय चक्र से धूलि घूसरित हुई,
बिखराव आया,
वो वहीं चला गया जहाँ जिसका सींग समाया।

पाँच हजार वर्ष बाद—
अब पुनः उस अग्र भूमि ने करवट बदली,
पत्थर-पत्थर बोला,
इतिहास ने भी अपना मुँह खोला।
सरकार और जन सहयोग से उसका पुनर्निमाण हो रहा है,
बच्चा-बच्चा हरभज-शाह की तरह उदार और धनवान हो रहा है,
इस बार उसका रूप पहले से भी अधिक सँवरा है, सजा है,
युगानुकूल चलना ही बजा है।

हाट-बाट, धर्मशाला, गौशाला, अतिथिगृह, औषधालय—
जलाशय, गुरुकुल, उपवन आदि ये तो अपनी जगह ठीक हैं,
नव नगर निर्माण के लिए अनिवार्य है, लीक है,

पर परम्परा से हटाकर जो कुछ हुआ है वह है 'वृद्धाश्रम',
अन्धे की लाठी, बेचारों का चारा,
हर प्रकार से असहायों का सहारा।
लक्खीताल, ने शक्ति-सरोवर के रूप में नया जन्म लिया है,
अब जाकर जनता ने बेचारे बंजारे का कर्ज भरपाई किया है।

महाराज अग्रसेन और महामाया लक्ष्मी के मंदिर तो बाजिव थे ही,
पर लक्ष्मी के साथ सरस्वती का मंदिर ?
यह एक क्रान्तिकारी विचार है,
दो बहनों का झगड़ा मिटाकर,
उन्हें एक धरती पर खड़ा करने वालों को नमस्कार है।
और भगवान मारूति की ६० फुट की प्रतिमा,
स्थापित करना,
वह श्री रामनाम के आधार पर, यह कल्पनातीत है,
वर्तमान से हारा हुआ अतीत है।

(फरवरी, १९९०)

इंसानों की बात करें हम

त्रिलोक गोयल

अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल से उठकर,
आओ ! खाली इंसानों से बात करें हम।
हीरे-हीरे को तराशना बुरा नहीं है,
पर आखिर माला में इन्हें पिरोना होगा।
हार पहिन कर जीतेगी माँ, वरना भाई-
कुछ पाकर के हमें बहुत कुछ खोना होगा।।
जाति-धर्म की जज़बाती बातें है केवल,
निकल दायरों से नूतन शुरुआत करें हम. . .आओ

ऐनक बदलो, आप नज़रिया बदलें,
छोटा-सा जग, बहुत बड़ा संसार दिखेगा।
आत्म-कथा लिखना मण्डूक छोड़ देंगे जब,
तब उनकी गौरव-गाथा इतिहास लिखेगा।।
बहुत बड़े कुटुम्ब को छोटा क्यों करते हो,
तात बना कर ही दुश्मन को मात करें हम. . .आओ

धरा, गगन, पाताल, नाग, नर, देव सभी का
अग्रसेन जी महाराजा ने किया समन्वय।
वे इतने उदार थे, हम संकुचित बनें क्यों,
हमको उनकी ही लय में होना है तन्मय।।
पीले हाथ रात के चाँद नहीं कर पाये,
उससे पहले जगकर पुनः प्रभात करें हम. . .आओ

इन बेशर्म हथौड़ों में मत जोड़ों खुद को,
जो इस देवी की प्रतिमा को तोड़ रहे हैं।
मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे बूचड़खाने बन,
हँस-हँस मानवता का रक्त निचोड़ रहे हैं।।
ये गंदी, ओछी हरकतें छोड़नी होंगी,
विष-वृष्टि तज, स्नेह-सुधा बरसात करें हम. . .आओ

शब्द-कोश में कटुता, घृणा नहीं रह पाये,
समता, ममता, संवेदना, सहिष्णुता दीखे।
तीर्थराज है वहीं, जहाँ हो संगम सबका,
महल-झोंपड़ी मिले सुदामा-कृष्ण सरीखे।।
'जीजा' पानी लिये रुक्मणी खड़ी रह गयी,
गंगा-जमुनी करुणामयी परात बनें हम. . .आओ।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९१)

हे पुण्य भूमि तुमको प्रणाम

दुलीचन्द अग्रवाल

हे आदि भूमि तुमको प्रणाम,
हे पुण्य भूमि तुमको प्रणाम।
तेरी गौरव गाथा विशाल,
तू अग्र सभ्यता का प्रमाण,
तू कालजयी तू अमरधाम,
हे मातृभूमि तुमको प्रणाम।
अग्रोदक कुल की आनबान,
तू सत्य अहिंसा की प्रतीक,
तू चिर शाश्वत तू परम धाम,
हे जन्म भूमि तुमको प्रणाम।
तेरे मुरझाए टीलों में,
है सुप्त हमारा साम्यवाद,
तू चिर नूतन तू चिर नवीन,
हे अमर भूमि तुमको प्रणाम।
हम ऋणी तुम्हारे अग्रवाल,
हम अग्रसेन के वंशज सब,
करते शत-शत तुमको प्रणाम,
हे अग्र भूमि तुमको प्रणाम।
तेरा उद्धार अभीष्ट आज,
निर्माण तुम्हारा पुनः साध्य,
यह प्रण करता है अग्रवंश,
हे कर्म-भूमि तुमको प्रणाम।।

(जनवरी, १९८९)

पाँचवा धाम

दुलीचन्द अग्रवाल

चार धाम की बात पुरानी
बड़ी सुहानी बड़ी लुभानी।
उत्तर में बद्री विशाल है,
पश्चिम कृष्णा विराजमान है।
पूरब में जगन्नाथ पुरी है,
रामेश्वर दक्षिणी धुरी है।
मध्य भाग सूना-सूना है,
होता दुःख दूना-दूना है।
सत्य अहिंसा साम्यवाद की,
जन्मभूमि अग्रोहा ही थी।
भारतीय दर्शन संस्कृति की,
मूल भूमि अग्रोहा ही थी।
अग्रोहा की ध्वस्त सभ्यता,
को नूतन परिवेश चाहिए।
पुण्य कार्य को करने हित,
संकल्प और आवेश चाहिए।
अग्रसेन मंदिर का,
नव निर्माण करो तुम।
माँ लक्ष्मी कुल लक्ष्मी,
का सम्मान करो तुम।
अग्रवंश का काम यही है,
सुनो पाँचवा धाम यही है।

(मई, १९८९)

अग्रोहा-वंदना

दुलीचन्द 'शशि'

तेरी गोदी में संस्कृतियाँ
कितनी पनपीं, परवान चढ़ीं,
तेरी माटी से गौरव की
कितनी गाथाएँ गयी गढ़ीं।

तेरा आँचल आदर्शवाद का
उपमाओं से भरा पड़ा,
दे रही गवाही गरिमा की
सतियों की अब तक बनी मढ़ीं।

हे अग्रवंश के पुण्य-धाम,
है नमन तुम्हें हे आदि ग्राम।

तेरे आँचल से प्यार और
आदर्श लुटाता जाता था,
हर पीड़ित-जन तेरे आंगन
में, गले लगाया जाता था।

सच्चे समाजवादी प्रसून
तेरी माटी में उपजे थे,
मानव-मानव को बन्धु-भाव
का, सबक पढ़ाया जाता था।

गौरव-गरिमा मण्डित ललाम,
है गमन तुम्हें हे आदि ग्राम।

तेरे अँचल में सुषमाएँ
प्रत्यक्ष दिखायी देती हैं,
इतिहास और जन-श्रुतियों
की, आवाज़ सुनायी देती है।

तेरे आंगन में इठलाती
सुख-समता की भीनी सुगन्ध,
उस पूर्व-पुरातन गरिमा की
हर बार दुहायी देती है।

हे अग्रसेन के कीर्तिधाम
है नमन तुम्हें हे आदि ग्राम।

(जुलाई, १९८७)

गौरव-गरिमा मण्डित ललाम,
है गमन तुम्हें हे आदि ग्राम।

तेरे अँचल में सुषमाएँ
प्रत्यक्ष दिखायी देती हैं,
इतिहास और जन-श्रुतियों
की, आवाज़ सुनायी देती है।

तेरे आंगन में इठलाती
सुख-समता की भीनी सुगन्ध,
उस पूर्व-पुरातन गरिमा की
हर बार दुहायी देती है।

हे अग्रसेन के कीर्तिधाम
है नमन तुम्हें हे आदि ग्राम।

(जुलाई, १९८७)

अग्रोहा पुनर्निर्माण महायज्ञ

दुलीचन्द 'शशि'

अग्रोहा को पुनः बसा कर,
अग्रसेन की कीर्ति उछालें।
अग्रबन्धु इस महायज्ञ में,
यथा शक्ति आहुतियाँ डालें।।

पुनः बसाने का अग्रोहा,
नींवों का निर्माण को रहा।
अग्र बन्धुओं के संग अब तक,
जुड़ी हुई कालिमा धो रहा।।

महायज्ञ सम्पादित करने,
सब को कदम बढ़ाने होंगे।
नगर-नगर और गाँव-गाँव से,
सब को पुष्प चढ़ाने होंगे।।

नई रोशनी, ध्वंस खण्डहरों पर,
फिर से बिखरानी होगी।
अग्रसेन के आदर्शों की ध्वजा,
पुनः फहरानी होगी।।

नव निर्माणों की बेला में,
ईंट-ईंट जुड़ रही जहाँ पर।
गौरव-गरिमा पुनः कीर्ति,
ध्वज लिए आज मुड़ रही वहाँ पर।।

अग्रोहा की पुनर्स्थापना,
किसी एक का काम नहीं है।
कोटि-जनों की मातृ-भूमि वह,

क्या सबका वहाँ नाम नहीं है।।
बने वहाँ सुन्दर प्राचीरें,
जिन पर निर्मित भव्य भवन हों।
बने अष्ट-दश खम्भ वहाँ पर,
यज्ञशाला हो नित्य हवन हों।।
बना शक्ति-सागर सुरम्य-सा,
लख्खी सर की याद दिलाये।
बने पंक्तिबद्ध देवालय, जो
पूर्व सुयश की गंध लुटायें।।
वृद्धाश्रम निर्मित हो वहाँ जो,
वृद्धों की आशीषें पाये।
अग्रसेन का स्मृति-मंदिर,
जन-जन के मन को हुलसाये।।
कदम-कदम पर कीर्ति कलश हो,
शीश महल-सा सभागार हो।
बनी कुटीरें यहाँ-वहाँ पर,
पूर्व पुरातन यादगार हो।।
कुल देवी शीला का मंदिर,
मन-मोहक छवि लिए हुए हो।
लिखा जाय इतिहास नया,
फिर, यश गंगाजल पिये हो।।
एक रुपया, एक ईंट की प्रथा,
पुनः आँचल फैलाये।
नव निर्मित अग्रोहा फिर से,
अग्रसेन को वहाँ बुलाये।।

(जनवरी, १९९०)

ओ अग्र बन्धुओ ! उठो, उठो

दुलीचन्द 'शशि'

ओ अग्र बन्धुओ ! उठो, उठो,
इतिहास बुलाता है देखो।
गौरव गरिमा, गर्वी अतीत,
तुम पर शरमाता है देखो।।
है आज तुम्हारी जाति कहाँ,
है किधर तुम्हारा बाँकापन।
ओ अग्रसेन की सन्तानों,
हो रहा तुम्हारा अधः पतन।।
कहाँ गया तुम्हारा जाति-प्रेम,
उन्नति का ध्येय विशाल कहाँ।
सम्मानित जिनकी जाति नहीं,
है ऊँचा उनका माल कहाँ।।
किस लिए पतन हो रहा अरे,
इस ओर नहीं क्यों ध्यान गया।
थी अग्र जाति सबसे आगे,
वह कहाँ आज सम्मान गया।।
कितनी प्रतिभासित प्रतिभाएँ,
बेहाली के दिन काट रहीं।
कितने सुमनों की मुस्कानें,
आँखों में आँसू बाँट रहीं।।
यह बात नहीं कि जाति मेरी,
हो गई सम्पदा से विहीन।
हाँ, किन्तु पुरातन गरिमा से,

हो रही जाति यह दीन-हीन ।।
है अग्रवाल धनपति समाज,
ऐसा सब लोग समझते हैं ।
इसके धन-जन सम्बल से तो,
दुनिया के काम सँवरते हैं ।।
युग-चरण बढ़ रहे तेजी से,
हम लोग जहाँ के तहाँ पड़े ।
चल रहा समय का चक्र तीव्र,
हम देख रहे हैं खड़े-खड़े ।।
इन नई-नई तस्वीरों में,
हम रंग नहीं भर पायेंगे ।
तो निश्चित जानो अग्र वीर,
युग-युग ठुकराये जायेंगे ।
जिस जाति में हैं भरे पड़े,
उद्योगपति, व्यवसायी धनी ।
उसके असंख्य नव युवकों की,
क्यों दीन दशा है आज बनी ।।
फिर एक बार इस जाति का,
प्रत्येक व्यक्ति हो जाय सजग ।
कर्त्तव्य कर्म के मार्ग पर,
ना होवें उसके पग डग-मग ।।
युग थोप रहा जिम्मेदारी,
श्री अग्रसेन सन्तानों पर ।
निज देश-जाति की समृद्धि,
निर्भर है अब श्रीमानों पर ।।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक', अक्टूबर, १९९०)

अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल

दुलीचन्द 'शशि'

वह कौन कहो जिसने जन-जन को एक नया अभियान दिया,
वह कौन कहो अग्रोहा को जिसने नव रूप प्रदान किया।
वह कौन कहो जिसने समता का नव आलोक बिखेरा था,
वह कौन कहो जो लोकतंत्र का अद्‌भुत रंग-चितेरा था।
जो साम्य योग का अधिनायक सुख-समता जिसकी अमर देन।
वह अग्रसेन वह अग्रसेन।।

वह कौन ग्राम जहाँ बन्धु भावना बढ़ी पली परवान चढ़ी,
वह कौन ग्राम कवियों ने जिसकी गौरव गाथा खूब गढ़ी।
वह कौन धरा जिसके आँचल पौरुष खुल कर खेला था,
वह कौन धरा जिसकी रज-कण में सुख-समता का मेला था।
वह कौन ग्राम जिसकी गरिमा ने अभ्यागत का मन मोहा।
वह अग्रोहा वह अग्रोहा।।

वह कौन कहो जो अग्रसेन की वाणी समझ न पाये,
वह कौन कहो जो प्यार परस्पर अब तक बाँट न पाये।
वह कौन कहो जिनके बस में धन-जन की ताकत बहुत बढ़ी,
वह कौन कहो जन्मभूमि जिसकी अब तक वीरान पड़ी।
वे अग्रसेन की प्रतिमा पर हर वर्ष चढ़ाते फूल माल।।
वह अग्रवाल वह अग्रवाल।।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक', अक्टूबर, १९९०)

मंजिल दूर नहीं है

दुलीचन्द 'शशि'

अग्रसेन की जन्म जयन्ती,
ठोर-ठोर उत्साह जुटा है।
पर समाज में धुन्ध पटा है,
और धरातल घुटा घुटा है।

जश्न मनाने से पहले हम,
ढकी, छिपी कुछ परतें खोलें।
अग्रसेन की जय कहने से
पहले, अपने हृदय टटोलें।

पिछले एक दशक में काफी
अग्रसेन का शोर हुआ है।
पर समाज भीतर ही भीतर
और कहीं कमजोर हुआ है।

अग्रसेन के आदर्शों को
हमने कितना स्वीकारा है।
पिछले एक दशक में हमने
क्या जीता है, क्या हारा है ?

कहो, समय की आवाज़ों को
अग्रबन्धु क्या सुन पाये हैं ?
दिशाहीन-से लगते अब तक
नहीं मार्ग तक चुन पाये हैं।

नये दौर की नयी चुनौती

कितनों ने स्वीकारी बढ़कर।
राजे और रजवाड़ों जैसे
अभी विवाहों में आडम्बर।

अभी शादियों में लक-दक है
अभी नृत्य करता है पैसा।
दहेज दिखाना ज्यों का त्यों है
सब कुछ है जैसा का वैसा।

धनिकों और गरीबों में क्या
अन्तर थोड़ा पट पाया है ?
ऊँच-नीच का भेद हमारे
बीच कहाँ तक घट पाया है ?

अग्रसेन के आदर्शों को
हमने कितना प्यार दिया है ?
और समय के बदले मूल्यों
को कितना स्वीकार किया है ?

क्यों न शादियाँ होती दिन में
कहो रात को ही क्यों सुखकर हैं ?
सामूहिक शादी में शामिल
हों, ऐसे कितने 'ऊँचे' घर हैं ?

वह अग्रोहा जहाँ उलीचो माटी
तो इतिहास मिलेगा।
हमें हमारी पूर्व पुरातन
गरिमा का आभास मिलेगा।

अरे, जहाँ की रज-कण तक में
गौरव की गरिमा पैठी है।

वह धरती माँ क्यों उदास है
क्यों वह गुम-गुम-सी बैठी है ?

धन-जन से सम्पन्न सपूतों में
जिसकी है शक्ति निराली।
जिसने सुख और समता बाँटी
उस माँ का आँचल क्यों खाली ?

लोकतंत्र का मंत्र दिया था,
जिसने उसकी गाथा गायें।
लेकिन उसके सन्देशों को,
कार्य रूप में भी अपनायें।

अग्रसेन के वंशज जिसकी
अनुकम्पा से 'ऊँचे' पहुँचे।
उसके पावन जन्म-दिवस पर
हम सब यह बातें भी सोंचे।

वह प्रदीप जो दिख रहा है
झिलमिल दूर नहीं है।
थक कर बैठ गये क्यों भाई
मंजिल दूर नहीं है।

(मार्च, १९९२)

अग्रसेन-अग्रोहा-अग्रवाल

देश बन्धु आर्य

'अग्रोहा' के आर्यजनों, तुम 'अग्रसेन' को पहचानों।
अग्रवाल है एक ये मानों, और भारत के दीवानों।।

ऊँच-नीच का भाव मिटाकर, हमें एक हो जाना है।
अग्र ध्वज के नीचे आकर, हम सबको जुड़ जाना है।।

धन-अर्जन का लोभ त्याग, अब हमने ली अंगड़ाई है।
अग्रोहा को धाम बनायें, यही सबने कसम उठाई है।।

अखिल विश्व के अग्रवाल, जब सभी एक हो जायेंगे।
असम्भव लगते सभी कार्य, पल में संभव हो जायेंगे।।

(अक्टूबर, १९८९)

अग्रोहा-विकास

नरेश कुमार गोयल

अग्रोहा में
अग्रवालों के विकास के लिए
बहुत से महान पुरुष
निकले हैं इस मार्ग पर
परोपकार करने
अग्रवालों की
महिमा का गुणगान करने
सोये हुयों को उठाने
उनके अधिकार को
उन्हें दिलाने
उनकी छिन्न-भिन्न
शक्ति को एक-करके
देश में, विदेश में
राजनीति में
शांति में
उन्हें ऊँचा चमकाने
आओ हम भी
कुछ उपकार कर लें
उनके साथ
धन से, तन से, मन से
उचित सेवा करके
जीवन सफल कर लें।

(जुलाई, १९८९)

मैं अग्रवाल हूँ !

नारायणदास अग्रवाल 'वीर'

मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
मेरी नस-नस में आर्य रक्त, मैं अग्रसेन का वंशज हूँ,
मैं मानवता का दिव्य तेज, मैं वैश्य वर्ग का सूरज हूँ,
मैं हूँ भारत की एक शान।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
मैं भारत माँ का वरद पुत्र, मम हाथों में व्यापार-तन्त्र,
मैं स्वदेश की अर्थ रीढ़, मैं भारत का समृद्ध मन्त्र,
मैं हूँ समाज का कीर्तिमान।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
सच्ची मानवता के प्रतीक श्री नन्द यशोदा वैश्य जाति,
पर ब्रह्म जिनके-आँगन में खेले थे आकर भाँति-भाँति,
है वही रक्त मुझ में महान।

मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
मैं तुलाधार का वंशज हूँ, जाँजलि तक को उपदेश दिया,
मैं भामाशाह का वंशज हूँ, अर्पण जिसने सर्वस्व किया,
जिनका चहूँ दिशा है यशोगान।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
हिन्दी युग के आदि प्रवर्तक, भारतेन्दु हुए थे हरिश्चन्द्र,
वानी उदार, प्रतिभाशाली, उनके समझ सब विज्ञ मन्द,
वे अग्रवाल थे देश शान।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
लाला लाजपत राय जन्मे, भारत की लाज बचाने को,

प्राणों की दे दी आहुति, निज देश स्वतन्त्र कराने को,
मुझमें भी है वह आन-बान।

मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
दार्शनिक हुए भगवानदास, थे देश-भक्त सुत श्रीप्रकाश,
जिनसे थे गाँधी शक्तिमान।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
श्री जयदयाल जी गोयनका, हनुमान प्रसाद जी पोद्दार,
दी बहा भक्ति-गंगा जिनने, हो गये सभी धर्मावतार,
मैं उस खून की हूँ सन्तान।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
मुझ में ऋषियों का महा तेज, पीरों का है वीरत्व भरा,
मैं दिव्य शक्ति, मैं दिव्य रूप, गम्भीर-धीर-सम वसुन्धरा,
मैं राम कृष्ण पद रज महान।

मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।
माँ लक्ष्मी का वरदान मुझे, मेरा सद्ज्ञान कर्म परहित,
है गर्म पवित्र खून मुझमें, पर दुख कातरता बहता नित,
भगवान भक्त मैं धर्म-प्राण।
मैं अग्रवाल हूँ ! अग्रवाल होने का मुझको स्वाभिमान।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक', अक्टूबर, १९९०)

महाराज अग्रसेन : श्रद्धा-सुमन

प्रो० निडर

दलित को प्यार दिया, दुःखी को दुलार दिया।
जनता को सुख-संसार दिया तुमने।

क्रूरता को छोड़ दिया, जीवन को मोड़ दिया।
वासना को मन से विसार दिया तुमने।

एक रूपये का चल, और ईंट का अचल।
पूँजीगत सच्चा उपहार, दिया तुमने।

किसी में न भेद रहे, किसी को न खेद रहे।
लाखों ज़िंदगियों को सँवार दिया तुमने।

(अगस्त, १९९२)

अग्रवालों की दानशीलता

पी० पी० सिंगला

ये दानी सभी हैं, अदना क्या आला।
इन से हुई हिन्द की शान बाला।।

हर एक धाम पर इनके लंगर खुले।
हर एक घाट पर इनके पत्थर लगे।।
कहीं पर शिवालय कहीं धर्मशाला।
कहीं औषधालय कहीं गौशाला।।

स्कूल और कॉलेज सभी ओर खोले।
सभी राष्ट्र-नेता चाँदी से तोले।।
जब देश पर कोई भी कष्ट आया।
कहत पड़ गया या भूचाल आया।।
तूफ़ान या टिड्डी दल ने सताया।
सूखा पड़ा कहीं सैलाब आया।।

इन्होंने तुरन्त मुँह तिजोरी का खोला।
अपने पराये का विष नहीं घोला।।

जब देश पर चीनी हमला हुआ।
सीमा पै हिन्द-पाक झगड़ा हुआ।।
इन्होंने ब्लैंक-चैक खजाने में डाले।
नकद भी दिया और गहने भी गाले।।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९०)

श्री अग्रसेन चालीसा

बाबूलाल

श्री अग्रदेवाय नमः

सोरठा

सुमिरहुँ श्री गणराज, प्रथम पूज्य गिरजा सुवन।
सुफल करहुँ सब काज, बार-बार वंदहुँ चरन।।

चौपाई

बंदहुँ महा महिम अवनीशा, अवतारेउ जन हित जगदीशा।
भानु वंश जिन्ह कीन्ह उजागर, अनुपम अति शोभा सुखसागर।
मुकुट मनोहर माथे सोहे, भाल विशाल तिलक मन मोहे।
अलकें घुँघरालीं अति प्यारी, मोतिन लरन गुंथी रतनारी।
कमल नयन वर भृकुटि विशाला, कानन कनक जड़ित शुचिबाला।
नासा अमित मनोहर नीकी, डाढ़ी शुभ्र मूँछ प्रभु जी की।
निरख मदन मन रहो लुभाई शशि आनन की सुन्दरताई।
अंग अंगरखी ललित सुहाई, चूड़ीदार विचित्र सराई।
हीरन हार कंठ मणि माला, विचविच मोतिन मण्डित आला।
फेट कृपान कसी कटि नीकी, अरिदल गंजन तेज अनीकी।
जय जय अग्रसेन महाराजा, कीन्हों सकल विश्व को काजा।
जय नृप रिषि जय गौ हितकारी, अग्रदेव जय जय असुरारी।
त्रेता युग अवतार अनेका, भये विचित्र एक ते एका।
महाराज महिधर नृप गेहा, लीनेहु प्रभु अवतार सनेहा।
श्रुति कह बारंबार पुकारी, लीला अपरंपार तिहारी।
वैश्य वंश के अग्र अधिष्ठा, श्राप निवार निभाई निष्ठा।
इष्ट देव प्रभु पूज्य हमारे, जीव मात्र के हैं रखवारे।
तपो भूमि सुन्दर सुचि जानी, नगर बसाय कीन्ह राजधानी।
वापी कूप तड़ाग खुदाये, मन्दिर विविध वरन बनवाये।

परम रम्य अग्रोहा पावन, सकल कलुष त्रय ताप नसावन।
दिव्य राज दरबार अनूपा, ब्राजहिं जड़ित सिंहासन भूपा।
छत्र चमर अनुपम छवि छाजै निरख देवपति को मन लाजै।
पुत्र बली युवराज अठारा, चतुर सूर सरदार अपारा।
सुखी रहिहिं सब पुर के लोगा, सुलभ जिन्हें सुरपुर सम भोगा।
सकल तीर्थ नाना विधि कीन्हें, बहु प्रकार विप्रन धन दीन्हें।
वेद पुरान सुने मन लाई, पूरे सत्रह यज्ञ कराई।
पशु हिंसा लख यज्ञ अधूरी, छोड़ दई कीन्ही नहिं पूरी।
अग्रवाल कुल तिहते पाये, साढ़े सत्रह गोत्र कहाये।
गरगसु गोइल सिंहल मीतल, बांसल कांसल ऐरन जीतल।
कुच्छल मंगल तायल तिंगल, धारण भंदल नागिल बिंदल।
मघुकल गोयन नाम धराये, इक इक पुत्रन सौप चलाये।
तिह साखें त्रयलोक समानी, सुखी सकल समृद्ध दिखानी।
कीन्ह विविध विधि देव भलाई वसुधा निरख निरख बलि जाई।
प्रभु अपने जन की रुचि राखें, पूरन करिहि सदा अभिलाखें।
सुमिरत अग्रदेव जगमाहीं, कठिन सो काज सुलभ हो जाहीं।
सहित सनेह ध्यान धर जोई मन वांछित फल पावै सोई।
अग्रदेव चालीसा पढ़तन, सुफल होय जन को मानस तन।
रोग हरै तन तेज प्रकासै, नित नव सुख सम्पति गृह वासै।
धन्य होय प्रभु के गुण गावैं, परमानन्द मगन मन रहवैं।
बालक अबुध दीन जन जानी, कृपा करहु कुल गुरु गुण ज्ञानी।

दोहा

प्रेम सहित नित पाठकर, ध्यावहिं जो चित लाय।
अग्रसेन महाराज जी, ताकी करहिं सहाय।।
सेवक बाबूलाल सौं, कह लायो गुरु देव।
हृदय गोय राखहु सुजन, जीवन को फल लेव।।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक', अक्टूबर, १९९०)

श्री अग्रसेन चालीसा

बाबूलाल

श्री अग्रदेवाय नमः

सोरठा

सुमिरहुँ श्री गणराज, प्रथम पूज्य गिरजा सुवन।
सुफल करहुँ सब काज, बार-बार वंदहुँ चरन।।

चौपाई

बंदहुँ महा महिम अवनीशा, अवतारेउ जन हित जगदीशा।
भानु वंश जिन्ह कीन्ह उजागर, अनुपम अति शोभा सुखसागर।
मुकुट मनोहर माथे सोहे, भाल विशाल तिलक मन मोहे।
अलकें घुँघरालीं अति प्यारी, मोतिन लरन गुंथी रतनारी।
कमल नयन वर भृकुटि विशाला, कानन कनक जड़ित शुचिबाला।
नासा अमित मनोहर नीकी, डाढ़ी शुभ्र मूँछ प्रभु जी की।
निरख मदन मन रहो लुभाई शशि आनन की सुन्दरताई।
अंग अंगरखी ललित सुहाई, चूड़ीदार विचित्र सराई।
हीरन हार कंठ मणि माला, विचविच मोतिन मण्डित आला।
फेट कृपान कसी कटि नीकी, अरिदल गंजन तेज अनीकी।
जय जय अग्रसेन महाराजा, कीन्हों सकल विश्व को काजा।
जय नृप रिषि जय गौ हितकारी, अग्रदेव जय जय असुरारी।
त्रेता युग अवतार अनेका, भये विचित्र एक ते एका।
महाराज महिधर नृप गेहा, लीनेहु प्रभु अवतार सनेहा।
श्रुति कह बारंबार पुकारी, लीला अपरंपार तिहारी।
वैश्य वंश के अग्र अधिष्ठा, श्राप निवार निभाई निष्ठा।
इष्ट देव प्रभु पूज्य हमारे, जीव मात्र के हैं रखवारे।
तपो भूमि सुन्दर सुचि जानी, नगर बसाय कीन्ह राजधानी।
वापी कूप तड़ाग खुदाये, मन्दिर विविध वरन बनवाये।

परम रम्य अग्रोहा पावन, सकल कलुष त्रय ताप नसावन।
दिव्य राज दरबार अनूपा, ब्राजहिं जड़ित सिंहासन भूपा।
छत्र चमर अनुपम छवि छाजै निरख देवपति को मन लाजै।
पुत्र बली युवराज अठारा, चतुर सूर सरदार अपारा।
सुखी रहिहिं सब पुर के लोगा, सुलभ जिन्हें सुरपुर सम भोगा।
सकल तीर्थ नाना विधि कीन्हें, बहु प्रकार विप्रन धन दीन्हें।
वेद पुरान सुने मन लाई, पूरे सत्रह यज्ञ कराई।
पशु हिंसा लख यज्ञ अधूरी, छोड़ दई कीन्ही नहिं पूरी।
अग्रवाल कुल तिहते पाये, साढ़े सत्रह गोत्र कहाये।
गरगसु गोइल सिंहल मीतल, बांसल कांसल ऐरन जीतल।
कुच्छल मंगल तायल तिंगल, धारण भंदल नागिल बिंदल।
मधुकल गोयन नाम धराये, इक इक पुत्रन सौप चलाये।
तिह साखें त्रयलोक समानी, सुखी सकल समृद्ध दिखानी।
कीन्ह विविध विधि देव भलाई वसुधा निरख निरख बलि जाई।
प्रभु अपने जन की रुचि राखें, पूरन करिहि सदा अभिलाखें।
सुमिरत अग्रदेव जगमाहीं, कठिन सो काज सुलभ हो जाहीं।
सहित सनेह ध्यान धर जोई मन वांछित फल पावै सोई।
अग्रदेव चालीसा पढ़तन, सुफल होय जन को मानस तन।
रोग हरै तन तेज प्रकासै, नित नव सुख सम्पति गृह वासै।
धन्य होय प्रभु के गुण गावैं, परमानन्द मगन मन रहवैं।
बालक अबुध दीन जन जानी, कृपा करहु कुल गुरु गुण ज्ञानी।

दोहा

प्रेम सहित नित पाठकर, ध्यावहिं जो चित लाय।
अग्रसेन महाराज जी, ताकी करहिं सहाय।।
सेवक बाबूलाल सौं, कह लायो गुरु देव।
हृदय गोय राखहु सुजन, जीवन को फल लेव।।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक', अक्टूबर, १९६०)

अग्रोहा : जीवंत धाम हमारा है

बी० डी० गुप्ता

सुन अग्रोहा खंडहरों में गौरव-गरिमा की करुण पुकार,
रोये सत्यकेतु स्वराज्यमणी तथा अन्य अग्र साहित्यकार।

जागा कोमल कवि-हृदय भावना आवेश लिये,
हृदय-पद्यों में आँसू बन लेखनी से बह गये।
सुन पढ़ और देख दशा अग्रवंशी दहल गये,
जोश में भरे पर होश रहे पक्के इरादे किये।
जन-जागरण और नव-निर्माण को चल दिये,
बढ़ते गये, जुड़ते गये मन से मन चिनते गये।

कारवाँ बढ़ता गया लछिव भवन उभरता गया,
स्वरूप निखरा, शुभा शीश मिला सत्य विचार पक गया।
पूरी रेल दर्शन को आई चमत्कार कर दिखलाया,
धन्य हो कह देवी, आँचल में विश्राम दिया।

अब खंडहरों में नहीं घंटों से निकलता है नाद,
अग्रोहा केवल नाम नहीं कोई गाम नहीं, एक नारा है।
दुनियाँ वालो अग्रोहा जीवंत धाम हमारा है।

(सितम्बर, १९८९)

तीर्थ वहाँ होगा और वरदान भी होगा

भरत कुमार जगदीश प्रसाद अग्रवाल

मालूम न हमें था कि धाम अग्रोहा भी होगा,
तीर्थ वहाँ होगा और वरदान भी होगा।

मंजिल हमारी एक है हिम्मत से बढ़ेंगे,
पाप और हिंसा से हम डट के लड़ेंगे।

श्रम जिसने किया, उनका वहाँ नाम भी होगा,
मालूम न हमें था कि धाम अग्रोहा भी होगा।
तीर्थ वहाँ होगा और वरदान भी होगा।।

पग-पग कर हम मंजिल पर बढ़ते ही रहेंगे,
गिर जायें अगर चोटी पर चढ़ते ही रहेंगे।

स्वर्ग जैसा बने वैसा वहाँ काम भी होगा,
मालूम न हमें था कि धाम अग्रोहा भी होगा।
तीर्थ वहाँ होगा और वरदान भी होगा।।

बंजर है जहाँ आज वहाँ मंदिर भी बनेंगे,
पतझड़ है जहाँ आज वहाँ फूल खिलेंगे।

कलियुग है जहाँ आज वहाँ सतयुग बना होगा,
मालूम न हमें था कि धाम अग्रोहा भी होगा।
तीर्थ वहाँ होगा और वरदान भी होगा।।

झंडा गान

मुंशी लाल अग्रवाल

केसरिया रंग सबसे प्यारा। झंडा ऊँचा रहे हमारा।।

अठारह किरण दिखाने वाला। सबको प्रेम सिखाने वाला।।
शांति मार्ग बताने वाला। अग्रवंश का तन-मन तारा।। झंडा...

आओ अंग्रबंधुओ आओ। अग्रोहा निर्माण कराओ।।
सब मिल इसमें हाथ बढ़ाओ। अग्रोहा है धाम हमारा।। झंडा...

संगठन को मजबूत बनाओ। समाजवाद को फिर से लाओ।।
रुपया ईंट को तुम अपनाओ। समाजवाद का नारा।। झंडा...

वैश्य जाति को एक बनाओ। भेदभाव को शीघ्र मिटाओ।।
इस झंडे के नीचे आओ। तब पूर्ण हो कार्य हमारा।। झंडा...

(जून, १९९२)

अग्रसेनो जयति

डॉ० मोहनलाल गुप्त

अग्रसेनो जयति जय जय, अग्रसेनो जयति जय।
हे महालक्ष्मी दुलारे, हम सभी को कर अभय।।

हे तात श्री ! हम माँगते हैं, आज यह वरदान।
देशधर्म समाज का हो, हमें गौरव मान।।

सन्मार्ग से ही धन कमायें, दान स्वेच्छा से करें।
ज्योति विद्या की जगाकर, विश्व का हम तम हरें।।

घोर संकट की घड़ी में भी, कभी मानें न भय।
हे महालक्ष्मी दुलारे, हम सभी को कर अभय।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९०)

हमें बुलाया है

डॉ० मोहन लाल गुप्ता

निज अतीत वैभव-गाथा से, परिचित हमें कराया है।
गौरव-गरिमा ने अग्रोहा की ही हमें बुलाया है।।

तप-स्थली यह अग्रसेन की, अग्रभूमि अग्रोहा है।
उस समतावादी राजा की, कर्मभूमि अग्रोहा है।।
इसी धरा के जयकारों से, हमने गगन गुँजाया है।
गौरव-गरिमा ने अग्रोहा की ही हमें बुलाया है।

हरा-भरा था जो अतीत में, चमन हाय वीरान हुआ।
अग्रसेन जी के अग्रोहे का हर पथ सुनसान हुआ।।
लुटा हुआ वैभव लौटाने, समय आज फिर आया है।
गौरव-गरिमा ने अग्रोहा की ही हमें बुलाया है।।

चलो आज कुलदेवी माँ के, चरणों में हम नमन करें।
पूज्य पितामह अग्रसेन जी के चरणों में नमन करें।।
पूज्य भूमि अग्रोहा का, इतिहास सभी ने गाया है।
गौरव-गरिमा ने अग्रोहा की ही हमें बुलाया है।।

विष्णु-प्रिया के अरे लाड़लो, बन कर भामाशाह रहो।
पितृ-भूमि संकल्प पूर्ण हो, इस प्रयास को सदा करो।।
कुलदेवी माता लक्ष्मी ने, फिर से हमें बुलाया है।
गौरव-गरिमा ने अग्रोहा की ही हमें बुलाया है।।

(दिसम्बर, १९९१)

दानव दहेज अभिशाप महा

मोहनलाल अग्रवाल

दानव दहेज अभिशाप महा,
फैली है ज्वाला जन-जन में।
सात्विक भावों की बेल मधुर,
अब ले आना है जीवन में।
इसका जड़ से उन्मूलन ही,
वरदान बनेगा भारत का।
संगठित त्याग का बल केवल,
कारण होगा उन्मूलन का।
सोये वीरो अब जाग उठो,
अब चिर निद्रा का समय नहीं।
इसे हटाओ कर प्रयास,
इसकी बुनियादी नीव नहीं।
मानव जीवन का अर्थ यही,
कुछ त्याग कार्य करते जायें।
मन-वचन-कर्म जब तीनों में,
सात्विकी धारणा आयेंगी।
लहराती लहरें शांति और,
सुख की तन में छा जायेंगी।
मानवता से हट करके,
लेना दहेज है ठीक नहीं।
अपने समाज को अवनति में,
ले जाना अच्छा कार्य नहीं।

(जून, १९८९)

समूह विवाह की जलती रहे मशाल

मोहनलाल एम० अग्रवाल

जलती रहे मशाल, समूह विवाह की, जलती रहे मशाल।
जलती रहे मशाल, हमारी जलती रहे मशाल।।

अंधकार फैला है काला, हर कुटिया में करें उजाला।
जाति-प्रेम की फेरें माला,
संघ, संगठन सभी दिशा में, बने ज्योति की माल। समूह...

भेदभाव की कड़ियाँ तोड़ें, रूढ़ रूढ़ियों का सिर फोड़ें।
मानवता का झण्डा लहरा,
गावें गीत विशाल, हमारी जलती रहे मशाल।। समूह...

इंकलाब कर सब डट जायें, नौजवान आगे बढ़ जायें।
गली-गली और चौराहों पर,
पहन विजय की माल, हमारी जलती रहे मशाल।। समूह...

बिन दहेज कन्या अपनायें, विधवाओं को गले लगायें।
दीन-हीन के दुख मिटायें,
अग्रवंश की रहे फूलती, मानवता की डाल।। समूह...

(मई, १९८९)

अग्रोहा : मेरी पुण्य भूमि

कुमारी रजिया सुलताना

अग्रोहा मेरी पुण्य भूमि, तुमको शत-शत है नमस्कार।
सारे जहान से ज्यादा, मुझको इसकी धरती से है प्यार।।

सूरजवंशी अग्रवाल हैं अग्रसेन की हम सन्तान।
प्राण भले ही जायें, पर रखेंगे इसका मान सम्मान।।

दुःख-दरिद्रता पास न फटकी, कभी यहाँ सब थे खुशहाल।
आज सभी हैं भटक रहे, कब आयेगा वह बीता काल।।

भूल सके न भूल पायेंगे, अपने तीर्थ अग्रोहा को।
जन्में जहाँ सभी अग्रवासी, फैले चतुर्दिशाओं को।।

मातृभूमि को जो बिसरा दे, वह कृतघ्न कहलाता है।
रजिया इसमें झूठ नहीं, वह राष्ट्रद्रोही कहलाता है।।

(अगस्त, १९८८)

एक चाह

कुमारी रजिया सुलताना

हम तो हैं तेरे चरणों के सेवक बहुत पुराने,
क्या अपराध हुआ प्रभु मुझसे, नहीं मुझे पहचाने।
तेरे नाम को दिल में बसाया, कैसे इसे भुलाऊँ,
दर्शन की इच्छा है भारी कैसे इसे तुम्हें बताऊँ ?
कैसे करुँ यकीन आप मन की इच्छा नहीं जाने।

तेरे दर पर आते जो, सौभाग्यवान बन जाते,
चरण-कमल में शीश झुकाकर, भाग्यवान बन जाते,
मन की इच्छा पूर्ण होती, पाते खुले खजाने।
यही आशा है मन में, इक दिन तेरे धाम पे आऊँगी,
अग्रवंश इक मंच बने, जग करे मान वर पाऊँगी।
अग्रवाल चमके जग में, जग इसकी हस्ती माने।।

हे दयावान तुम दया के सागर पूज्य पिता श्री अग्रसेन,
'रजिया' पर कर दो दया-दृष्टि, पाऊँ जीवन में अमन चैन।
धन-दौलत की कुछ चाह नहीं, अग्रोहा फिर बस जावे,
अग्रवाल चमके जग में, जग इसकी हस्ती माने,
हम तो हैं तेरे चरणों के सेवक बहुत पुराने।।

(नवम्बर, १९८८)

युगबोध

राघवेन्द्र लाल अग्रवाल

युग-युग से श्री अग्रसेन की, कीर्ति पताका लहराये।
कृषि, वाणिज्य, गौरक्षा का, सन्देश पुनीत सुनाये।।

गरिमा जाति-प्रेम की उज्ज्वल, सौहार्द स्नेह का वह उल्लास।
लोहा बन जाता था कुन्दन, असहायों को मिलता विश्वास।।

किन्तु आज हम भूल चुके हैं, अपनी सब वे बातें।
अपने ही जन झेल रहे हैं, गर्मी और बरसातें।।

करें प्रतिज्ञा आज समय है, अपने सम कर लेंगे।
नींद, निराशा, त्याग दुःखी के, दुःस्वप्नों को हर लेंगे।।

अफसोस ! नहीं कुछ करते हैं हम, करते बातें बड़ी-बड़ी।
अट्टहास करती है हम पर, देख 'दुर्दशा' खड़ी बड़ी।।

'बातें कम और काम अधिक', इस बीच मंत्र को अपनायें।
सभी सुखी हों रहें निरोगी, मिल-जुल साथ निभायें।।

उठो अग्र के वीर सपूतो, कर लो अपना हित चिन्तन।
तभी मिलेगा अग्रवंश को, पृथ्वी पर अतुलित आनन्द।।

(मार्च, १९८९)

उद्‌बोधन

राघवेन्द्रलाल अग्रवाल

उठो बन्धुओं हमें जगाने,
नया सवेरा आया है।
खोओ तम पाओ प्रकाश,
वह नई रोशनी लाया है।।

करो कर्म कर्तव्य निबाहो,
गीता का सन्देश यही है।
फल की आशा त्याग कर्म में,
जुट जाओ उपदेश यही है।।

अगर राह में अड़चन बन कर,
स्वयं हिमालय भी आ जाये।
फौलादी ताकत है हममें,
उससे भी हम टकरा जायें।।

चलो बन्धुओ बढ़े चलो अब,
अपनों को पुनः जगाना है।
शंख फूँक दो अब समाज में,
हमको जागृति लाना है।।

सूर्यांकित अपना गैरिक ध्वज,
हम को यह बतलाता है।
सूरज बनके चमको तुम सब,
यह सन्देश सुनाता है।।

उठो करो हित-चिन्तन अपना,
समय सुहाना आया है।
'अग्रसेन-वाणी' ने हमको,
यही मार्ग बतलाया है।।

(फरवरी, १९९१)

दहेज लेना पाप है

राघवेन्द्रलाल अग्रवाल

समाज सुधार के नाम पर,
तब मैं समाज में,
भोंपू लेकर चिल्लाता था।
दहेज लेना पाप है
बन्द कर दो इसे,
वह समाज के लिए अभिशाप है।
चंद वर्षों बाद,
मेरे पुत्र के लिए
शादी के पैग़ाम आने लगे।
मैंने प्रैक्टीकल शुरु कर दिया।
कहा—
लड़का पढ़ रहा है।
वह मानता नहीं।
भई, धर्मपत्नी से पूछ देखो
मैं जानता नहीं।
पर दहेज के लिए ख्याल रखें
मैं 'कुछ' माँगता नहीं।
माँ बेटे ने मिलकर क्या किया ?
मुझे नहीं मालूम।
सुना, देखा
पच्चीस का अटका पड़ा था।
लड़की का बाप हाथ जोड़े खड़ा था।
जिसका अर्थ मैं समझ रहा था।

मैंने कहा—
जल्दी कर लो तय।
अपना तो एक ही है।
वह भी है समदर्शी।
तेरी खुशी के लिए. .
हमने अपने सिद्धान्त की भी
कर ली है खुदकुशी।
एक लड़का था।
दिमाग भड़का था।
धर्मपत्नी की भी टेक रखनी थी।
परिस्थितियों से जकड़ा था।
अब हो गया हूँ 'फ्री'।
कोई बात होने से रही।
लड़के वालों से आवेदन है
लड़की वालों से निवेदन है—
वे 'मिलकर' काम करें
लेकिन याद रखें. . .
दहेज लेना पाप है,
बन्द कर दो इसे,
यह समाज के लिए अभिशाप है।

(जून, १९९१)

कुछ करिश्मा कर दिखाएँ

राघवेन्द्र लाल अग्रवाल

कभी चमकते थे जहाँ में,
सूर्य बन कर अग्र बंधु।
प्रत्येक घर में था समाया,
प्रेम का आनंद सिन्धु।

अग्रबालाएँ कभी,
आती न थीं पर-दृष्टि में।
आज वे बेबस हुई हैं,
रक्षक नहीं इस सृष्टि में।

कौन किसको क्या कहे,
और क्या बताएँ आपसे।
सर्वत्र फैला है विषम ज्वर,
जल रहे हैं संताप से।

आओ मिलें सब एक हो कर,
कुछ करिश्मा कर दिखाएँ।
श्रम, शक्ति और साहस जुटाकर,
'काल भैरव' को जगाएँ।

(जनवरी, १९९२)

मौन प्रश्न

कुमारी राज गोयल

कुछ सकुचायी-सी कुछ घबरायी-सी
अश्रपूरित फैले हुए नेत्रों से
निहार रही है चार दीवारी को
ना जाने कितनी अनगिनत बार
इस दहलीज को पार किया होगा
आज डबडबाई आँखों से देख-सिहर रही है।
उस अंगना को जिसमें घुटुअन खेली है।
एक बारगी जिस्म काँप गया कोमलांगना का
सोच कर मेरा भविष्य क्या होगा ?
इस अंगना की दहलीज के उस पार
देखने लगी कचनार के पेड़ पर
उस कली की ओर जो अभी-अभी खिली है
क्या माली कल इसे खिलने देगा ?
क्या यह आँधी के वेग से धूल में मिल जावेगी ?
क्योंकि उसने सुना है, पढ़ा है पत्रों में
अनेकों कलियों का बेवक्त मुरझाना
अनिश्चितता के मौन वातावरण में
एक बारगी पुनः सिहर उठी
कुछ वक्त बीते उसे भी जाना है।
एक नये माली की बगिया में,
सखियों के विदाई-गान से
आभास हुआ विछोह का
और उसकी निगाहें पुनः, एक मौन प्रश्न लिए
कचनार के उस पेड़ की ओर उठ गई।

(मई, १९९१)

अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ?

राजेन्द्र अग्रवाल

समाजवाद लोकतंत्र जहाँ पला है,
माटी में अहिंसा का बीज फला है।
दादा अग्रसेन की जो शान रही है,
अग्रवंशजों की पहचान रही है।
इन खण्डहरों में वक्त सोया पड़ा है,
यहीं पै तो गौरव अतीत गड़ा है।
गौरव की गाथा यूँ भुलाते तो नहीं,
अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ?

अग्रोहा की राजधानी रही है,
अग्रोहा नगरी पटरानी रही है।
भेंट एक ईंट और एक मुद्रा की,
यहीं की तो रीत पुरानी रही है।
आज तो उजड़ के वीरान हुई है,
लगता है नगरी बेगानी हुई है।
इसका स्वरूप लौटाते क्यों नहीं ?
अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ?

महालक्ष्मी की यहाँ पूजा हुई है,
कुलदेवी हम पर प्रसन्न हुई है।
कथा साध्वी 'शीला' की पुरानी नहीं है,
अग्र-संस्कृति, कोई कहानी नहीं है।
दिव्य चेतना जगे अमोघ मंत्रों से,

कीर्ति-पताका फहरानी यहीं है।
वरदान पाने झुक जाते क्यों नहीं,
अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ?

इंजीनियर, डॉक्टर या व्यापारी हैं,
वैज्ञानिक हैं या फिर कर्मचारी हैं।
माना अग्रवंशजों पर बोझ भारी है,
अग्रोहा विकास भी तो अपनी जिम्मेदारी है।
बुद्धि और कर्म के समन्वय से,
नया इतिहास लिखने की बारी है।
स्वर्णिम अध्याय फिर जोड़ जाते क्यों नहीं,
अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ?

अग्र शौर्य की नई गाथाएँ रच,
लेखनी अमर कर जाते क्यों नहीं।
कुलदेवी लक्ष्मी का स्मरण करके,
सुख सम्पन्नता पाते क्यों नहीं।
गौरवमय अतीत को नमन कर,
उज्ज्वल भविष्य बनाते क्यों नहीं,
यादगार एक बन जावे अमिट,
अग्रोहा है धाम, अपनाते क्यों नहीं ?

(फरवरी, १९९२)

उल्टी रीत हटाऊँगी

रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल

समाज के देख कर अत्याचार,
मेरे पलटे सभी विचार।

एक लड़का मुझे पास करन आया
उलटा सीधा बतलाया।
मार रही दारु की महकार,
मैंने लड़का दिया फटकार।

कोई लड़का पास करन आवे,
यह उल्टी रीत हटाऊँगी।
जब हमको रुपया देना है,
तो लड़का पास करन मैं जाऊँगी।

और हम दोनों राजी हो तो
वरमाला पहनाऊँगी।
यो मेरा जन्मसिद्ध अधिकार
मेरे पलटे सभी विचार।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९१)

अग्रसेन भगवान

रामेश्वर प्रसाद ताराचन्द

ओ अग्रसेन भगवान,
क्या-क्या करतब कर रही है, प्रभु आज तेरी सन्तान।
हद खरचीली शादी होरी,
नाचै सड़क पर छोरा-छोरी,
मामा, फुफा मारे फोरी,
सरम रही ना काण। ओ अग्रसेन भगवान...
लम्बा-चौड़ा मंच बनावे,
खुस हो-हो फोटू खिंचवावें,
देख-देख छोरे मुसकावें,
चले नैन के बान। ओ अग्रसेन भगवान...

लड़का काला हो चाहे गोरा,
टिका दिये बिन मिले नहीं छोरा,
बिन पूँजी व्यापार होरा,
घर-घर खुली दुकान। ओ अग्रसेन भगवान...
एक लड़की भोली-भाली की,
जाँच करे गोरी-काली की,
राम-कृष्ण जनमन वाली की,
मिट्टी हुई बिरान। ओ अग्रसेन भगवान...
जब तक इनका मन बदले ना,
गरीब घर छोरी जनमे ना,
रामेश्वर की यह प्रार्थना,
प्रभु लीजिये मान। ओ अग्रसेन भगवान...

(अगस्त, १९८९)

सुनो-सुनो अग्रसेन पर वार

रामेश्वरप्रसाद ताराचन्द

सुनो-सुनो अग्रसेन पर वार-
लड़की लड़कों को नचवालो,
अग्रवंश कै दाग लगालो,
यह दोनू इक सार। सुनो-सुनो...

म्हारे घंरा के छोरे नाचे,
जैसे गहन में मंगते माचे।
लय सुर का अन्दाज नहीं है,
बे-सरमां के लीहाज नहीं है।।
उल्टै सीधे कुल्ले मोडें-
बाजै की झनकार। सुनो-सुनो...

भांडी तोडें मुँह मटकावें,
बे दरदी से नोट बगावें।
कोई बोलै तो आँख दिखावें,
चढ़ रहा दारु का खुम्हार। सुनो-सुनो...
नट कंजर कुटनी और वेश्या,
नाचन का था इनका पेशा।
शादी में हिजड़े नाचे हमेशा,
इनका जन्म-सिद्ध अधिकार। सुनो-सुनो...

लड़की स्यानी होती आवे,
माता-पिता दोनों दुःख पावें।

लड़का मिलता नहीं उधार,
पहले रकम पटानी होसे-
नकदी का व्यापार। सुनो-सुनो...

क्यों कर रहे हो करनी माड़ी,
करनी कै फल मिले अगाड़ी।
रामेश्वर कहे सुनो अनाड़ी,
देखो निगाह पसार। सुनो-सुनो...

(दिसम्बर, १९९०)

कैसे गाऊँ गीत बहार के

रूपेश बंसल

बतला दे कोई कैसे मैं गाऊँ गीत बहार के।
रंगमहल की रंगीनी के सजनी के श्रृंगार के।।
झूठे वादों की गाड़ी पर,
उम्र थकी आशा ढोते,
शायद अब तो कटे जिंदगी,
मित्र यूँ ही रोते-रोते।

सपने सारे बिखर गये हैं मंगू चौकीदार के। बतला दे...
होली आई दिवाली आई,
चूल्हे आग न जलने पाई,
सूने हैं त्यौहार कि माँ की,
रहती है ममता अकुलाई।

विधि ने भाग लिखा क्या भैया, मुनुआ से सुकुमार के।बतला दे...
बिना इलाज मर गई रज़िया,
बिना दवा बीमार कमर,
सुल्ताना रुखसाना की तो,
कुहरे में खो गई सहर।

मजबूरी ने नक्शे खींचे, यौवन के व्यापार के। बतला दे...
महलों की महिमा हित देखो,
दफन हो रहीं नित झोंपड़ियाँ,
कैसे क्या कितना जुड़ पाये ?,

बिखर रही हैं नित-नित कड़ियाँ।

कहाँ सुरक्षा ! बने लुटेरे आसामी सरकार के। बतला दे....
हर शै ही दुःख की बदली है,
किस-किस की मैं व्यथा सुनाऊँ,
रोज अवस्था बिगड़ रही है,
किंचित शब्द न कहने पाऊँ।

जाने कब बदलेंगे भैया गर्हित दिन लाचार के। बतला दे...

(जनवरी, १९९०)

अग्रोहा-धाम

ललित कुमार अग्रवाल

अग्रोहा की पावन माटी,
पुरखों की याद दिलाती है।
ऐ वीर पुरुष की सन्तानों,
अब तो निद्रा से जागो तुम।।

अपने वंशज की पुण्य भूमि को,
फिर से आबाद कराओ तुम।
अग्रसेन के स्वप्नों को,
फिर से साकार कराओ तुम।।

सब मिल कर अपनी अखण्डता का,
कुछ तो आभास कराओ तुम।
आओ मिलकर अब हम सब,
उस पावन माटी पर जायेंगे।।

जहाँ अग्रसेन ने जन्म लिया,
सब मिलकर शीश झुकायेंगे।

(जनवरी, १९८८)

अग्रोहा की महिमा

ललित कुमार अग्रवाल

कोई जाय काशी बन्धुओ, कोई जाय वृन्दावन धाम।
हम भी जायेंगे-बन्धुओ, अग्रोहा के पावन धाम।।

सब मिलकर हम इस माटी पर, अपना शीश झुकायें।
समता और बन्धुत्व भाव का, फिर से यश फैलायें।।

अग्रोहा की पावन माटी, पुरखों की याद दिलाती है।
दानी-मानी अग्रसेन का, यह इतिहास दोहराती है।।

ऊँच-नीच का भेद मिटा, हम सब एक हो जायें।
सदियों से जो चली आ रही, प्रचलित प्रथा निभायें।।

एक रुपये संग ईंट को देकर, फिर से समता लायें।
अग्रोहा के पुनरुत्थान में, जीवन अपना लगायें।।

हम सब अग्रोहा जायें, हम सब अग्रोहा जायें।
अग्रोहा की पावन माटी पर, सब मिलकर शीश झुकायें।।

(अप्रैल, १९८८)

हे अग्रसेन तुम्हें मेरा प्रणाम

ललित कुमार अग्रवाल

सौ-सौ नमन करूँ मैं तुमको अग्रसेन महाराज।
अग्रोहा के वंशज हो तुम, तुमको मेरा प्रणाम।

अग्रोहा की इस पावन माटी पर अपना राज्य बसाया।
माँ लक्ष्मी की करी तपस्या, उनसे तुमने वर पाया।
समता बन्धुत्व भाव से तुमने सभी के दिल पर राज्य किया।
इन्द्र बना दुश्मन जो तुम्हारा उसे भी तुमने पराजित किया।

हार कभी ना मानी किसी से, कभी किसी से डरे नहीं।
ऐसे वीर पुरुष होकर भी तुम अहंकार से भरे नहीं।
अपने राज्य की खुशियाली पर, अपना जीवन त्याग दिया।
इन्द्र के कोप से डरी जनता पर अपना सब कुछ वार दिया।

अपने राज्य की जनता प्रजा को पुत्रों जैसा प्यार दिया।
पिता बने तुम अपनी प्रजा के उनके दुःख-सुख पर ध्यान दिया।
हे अग्रसेन तुम 'दीप-ज्योति' का प्रणाम स्वीकार करो।
अपनी प्यारी प्रजा पर स्नेह की बरसात करो।

(फरवरी, १९८८)

हम अग्रोहा तीर्थ बनावें

विष्णु चन्द्र गुप्ता

भारत के कोने-कोने से, अग्रबन्धु मिल आवें।
अग्रसेन की गौरव गाथा, घर-घर में फैलावें।
एक रुपया और एक ईंट, आदर्शभाव अपनावें।
तन-मन-धन अर्पित कर, निज समता की ज्योति जगावें।
सूत्र एक में बँधकर के, हम प्रबल शक्ति बन जावें।
अग्रोहा तीर्थ बनावें, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें।।

देश-भक्ति के लिए सदा ही, तन-मन-धन है वारा।
मोहन दास कर्मचन्द गांधी, लाजपत राय हमारा।
भारतेन्दु व गुप्त कवि, रत्नाकर सबका प्यारा।
न्याय क्षेत्र में शादीलाल का, चमका खूब सितारा।।
भामाशाह की दान वीरता, अग्रवंश अपनावे।
अग्रोहा तीर्थ बनावें, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें।।

अग्रवंश के गोत्र अट्ठारह का, क्या होगा कोई सानी।
रक्त शुद्धता की खातिर, अनावश्यक माने ज्ञानी।।
एक गोत्र में भाई-बहन हैं, अन्य गोत्र असनाई।
विवाह-सूत्र बन्धन की, कितनी अनुपम रीति बनाई।।
गोत्र व्यवस्था अग्रवंश के, सभी बन्धु अपनावें।
अग्रोहा तीर्थ बनावें, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें।।

छल, कपट, द्वेष, मांस, मदिरा से जो रहते हैं दूर।
सादा जीवन उच्च विचार का, पालन करें जरूर।।

दहेज दिखावा और प्रदर्शन, को जो माने क्रूर।
अग्रसेन के बालक हैं वे, अग्रसेन के नूर।।
सद्‌गुण सद्‌बुद्धि अपनाकर, जीवन सफल बनावें।
अग्रोहा तीर्थ बनावें, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें।।

भारत की संस्कृति सभ्यता के, हम ही रखवारे।
गौ पूजा, गायत्री, गीता हैं आदर्श हमारे।।
निर्धन व असहाय जनों की, पीड़ा को पहिचानें।
प्याऊ, मंदिर व गौशाला, जन-हित में हम जानें।
विद्यालय निर्माण कराकर, ज्ञान की ज्योति जगावें।
अग्रोहा तीर्थ बनावें, हम अग्रोहा तीर्थ बनावें।।

(दिसम्बर, १९८८)

अभिलाषा

व्यासचन्द अग्रवाल

मेरे मानसपटल पर,
अग्रसेन की मूर्ति,
अग्रसेन की भूमि,
सुन्दर-सा नक्शा है।
मेरे कदमों में,
अग्रसेन की प्रगति,
भुजाओं में मशाल,
और आँखों में,
समाज के उत्थान का,
मंदिर के निर्माण का,
सुन्दर सपना है,
जिनमें जनधाराएँ हैं,
पावन, निर्मल, गंगा-सी,
उल्लास की उठती,
हिलोरे हैं।
मेरी अभिलाषा है ;
मेरे हृदय की,
पावन भू-पर,
अग्रोहा का निर्माण हो,
अग्रसेन विराजें,
आँखों की सुन्दर जलधारा,
जिनका अभिषेक करे,
प्रगति जिनका यश बने,
और मशाल, भुजाओं की,
दीप बनकर,
इसे सदा रोशन रखे।
मेरी कामना है,
हर अग्रजन के,
हृदय पर यों,
अग्रसेन साक्षात हों,
हर अग्रजन यों
अपने आप में,
अग्रोहा-तीर्थ हों...
अग्रोहा-तीर्थ हों...

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक'
अक्टूबर, १९९०)

अग्रोहा को तीर्थ बना लें

डॉ० शिवशंकर गर्ग

अग्रोहा की माटी चंदन, इसका तिलक लगा लें।
दें अपना-अपना योगदान, अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

यह अग्रसेन की कर्मभूमि, यहाँ बन्धु-प्रेम पला था।
एक ईंट और एक रुपये में समता भाव घुला था।।
भूली-बिसरी मधुर बात को हम सब अब दोहरा लें।
दें अपना-अपना योगदान, अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

यहाँ विश्व को दया-एकता का उपहार मिला था।
सत्य, अहिंसा, प्रजातंत्र का सुंदर पुष्प खिला था।।
नष्ट किया गणराज्य स्वार्थ ने उस भूल को आज भुला लें।
दें अपना-अपना योगदान, अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

छप्पन कोड़ स्वर्ण मुद्रा से उसको पुनः बसाया।
उस दानी-मानी हरभज शाह का यश सब जग ने गाया।।
आक्रांता ने पुनः उजाड़ा, उससे कुछ शिक्षा लें।
दें अपना-अपना योगदान अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

युग ने करवट बदली है, फिर नव-निर्माण करेंगे।
अग्रसेन के सपनों को अब, हम साकार करेंगे।
दृढ़ निश्चय कर काम करें, मुश्किल आसान बना लें।
दें अपना-अपना योगदान अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

(फरवरी, १९८८)

दहेज कलंक को दूर करो

डॉ० शिवशंकर गर्ग

ओ अग्रवाल, महाराज अग्र की संतानों,
नव युग कुछ हमको कहता है, वह सुन लो तो।
है स्वर्ण लिखित इतिहास हमारी जाति का,
वह नष्ट हो उससे पहले कुछ सोचो तो।।

तुम अग्रिम बुद्धि वणिक पुत्र हो जग जाने,
हम पुत्र बेच उस बुद्धि का परिचय देते।
चौराहे पर कर खड़ा पुत्र निलामी में,
श्री अग्रसेन संतान नहीं हैं शरमाते।।

सोने के बाँटों से इज़्ज़त को तोल-तोल,
करते हिसाब शिक्षा का पैसे-कौड़ी में।
पीढ़ी की करते परख "दहेज देंगे कितना ?",
कन्या का शील-स्वभाव सभी कुछ पैसे में।।

कहने को कहते रुपया हाथ का मैल मगर,
इस मैल बिना नहीं मेल किसी से हो पाता।
होती है हत्या पुत्र-वधू की इसीलिए,
विधवा-सा जीवन किसी सुहागिन को मिलता।।

हाँ, एक समय था ईंट रुपया देकर भी,
हम गले लगाया करते जाति-भाई को।

पर आज हमें संतोष तभी हो पता है,
पगड़ी उछाल, नीचा दिखलादे भाई को ।।

हम यदि बचाना चाहते, जाति को अब भी,
तो धन से नहीं, अब गुण से पुत्र सगाई करो ।
'नूतन' युग से लो सीख, समय को पहिचानो,
जाति पर अंकित 'दहेज' कलंक को दूर करो ।।

(अक्टूबर, १९८८)

अग्रवाल ध्वज-गीत

डॉ० शिवशंकर गर्ग

अग्रवंश का ध्वज केसरिया, ऊँचा सदा रहेगा।
ऊँचा सदा रहेगा, ध्वज यह, ऊँचा सदा रहेगा।।

त्याग-तपस्या का सूचक, ध्वज केसरिया लहराये।
यूनानी हारे थे जिनसे, उनकी याद दिलाये।।
अग्रवंश के वीर जनों की, गाथा सदा कहेगा।
ऊँचा सदा रहेगा, ध्वज यह, ऊँचा सदा रहेगा।

सूर्य प्रेरणा देता हमको, जागें और जगायें।
एक रुपया एक ईंट मिल, सहयोगवाद अपनायें।।
अग्रोहा के बन्धु प्रेम की, गाथा अमर रखेगा।
ऊँचा सदा रहेगा, ध्वज यह, ऊँचा सदा रहेगा।

अग्रसेन की विमल कीर्ति, घर-घर तक पहुँचायें।
सत्य, अहिंसा, दया, न्याय व गोपालन सिखलायें।।
धर्म सभी समभाव लिए है, कहता यही रहेगा।
ऊँचा सदा रहेगा, ध्वज यह, ऊँचा सदा रहेगा।

आओ करें प्रतिज्ञा हम सब, इसे न झुकने देंगे।
सिर देकर भी "नूतन", इसको ऊँचा सदा रखेंगे।।
देश-जाति हित तन-मन-धन, सब अर्पण करना होगा।
ऊँचा सदा रहेगा, ध्वज यह, ऊँचा सदा रहेगा।

(फरवरी, १९८९)

शीला का शील

डॉ० शिवशंकर गर्ग

अग्रोहा के प्रसिद्ध सेठ, हरभजशाह बावन क्रोड़ी।
ने निज पुत्री की श्यालकोटी मेहताशाह से जोड़ी-जोड़ी।।
'शीला' जा पहुँची श्वसुर-सदन, महलों में गूँजी शहनाई।
इस मधुर मिलन की बेला में, सबने मन की निधि-सी पाई।।

कुछ लोग यहाँ पर ऐसे हैं, पर-सुख से दुःखी रहा करते।
जा कहा रिसालू राजा को, ऐसे ही एक मुसाहिब ने।।
राजा ! मेहता की पत्नी-सी देखी न सुनी है और कहीं।
यह अजब-गजब सेवक भोगे, स्वामी को जो सुख मिले नहीं।।

आँखों में शीला ही शीला, बस गई हृदय में कुटलाई।
मेहता को घर से बुला कहा, इक कठिन समस्या है आई।।
सुनता हूँ मैं रोहतासगढ़ में, कुछ राजद्रोह के बीज फले।
तुझसा कोई जन जावे जो, इन विद्रोहियों का सिर कुचले।।

इस तरह कुचक्रों में फँसकर, मेहता प्रवास में चला गया।
अवसर पा इधर रिसालू ने, षड्यंत्र रचाया एक नया।।
मावस की घोर असित निशि में, राजा ही मेहताशाह बनकर।
रक्षक को धोखा दे पहुँचा, शीला के महलों के अन्दर।।

मेहता शाह-सी आवाज बना, नृप बोला तब—प्राण प्रिये।
तब स्मृति खींच लाई मुझको, कैसे बिन प्यारी प्राण जिये।।
"तू ठहर मूर्ख, रे धूर्त, चोर, मैं अभी बुलाती हूँ चर को।

मृत्यु दण्ड देगी राज-सभा, निश्चय ही प्रातः दुश्चर को ।।"

राज-सभा दे दंड किसे, मैं स्वयं रिसालू राजा हूँ ।
इस स्वर्ण पुष्प से राजमहल को, शोभित करना चाहता हूँ ।।
नृप सँभले उससे पहले ही, छाती पर जा बैठी शीला ।
आँचल से कटारी खींच कहा रे दुष्ट बोल फिर प्रिय शीला ।।

मूर्छित कुछ देर रहा नृप फिर, बोला कर जोड़ करुण स्वर में ।
ठाऊ जान मुक्त कर दो मुझको, संतान प्रजा समझूँगा मैं ।
नारी मन करुणा का सागर, बन मोम तुरन्त ही पिघल गया ।
अपराध क्षमा कर शीला ने, नृप काल-गाल से मुक्त किया ।।

अतृप्त वासना विष बनकर, राजा को डसती थी जैसे ।
अपमान आग बन फूँक रहा, बदला लू मैं इसका कैसे ?
शीला की दासी से मिलकर, करवाया विष बीजारोपण ।
मेहता को लाने भेज दिया, नृप ने चर एक कुशल लक्षण ।।

राजाज्ञा पाते ही मेहता, प्रवास से लौटा हर्षाकर ।
ऐसा कुछ अनुपम चुम्बक था, वह खिंचा चला आया घर पर ।।
जैसे ही लेटे शैया पर, कुछ गड़ा बदन में गोल-गोल ।
विस्मित हो मेहता उठ बैठे, मखमली आवरण दिया खोल ।।

गिर पड़ी राजमुद्रा स्वर्णिम, स्पष्ट रिसालू अंकित था ।
ज्यों अंगारों पर पैर पड़ा, प्रेमी मन पीड़ित शंकित था ।।
तब सिसक़-सिसक शीला बोली—"गंगा-सी पावन हूँ अब भी ।
है शपथ विष्णु व लक्ष्मी की, मुझको परखो चाहे जब भी ।।"
बनवास गर्भिनी सीता को, था दिया एक अवतारी ने ।
शक के कारण क्या-क्या न सहा, इस भारत की सन्नारी ने ।।

वह दीप बुझने जैसा था, जीवन में रस अब रहा नहीं।
'हरभज' ले गये अग्रोहा, दोनों को कुछ भी कहा नहीं।।

दिन-रात और महिने बीते, ऋतुएँ कितनी ही बीत गयीं।
एक रात दासी ने मेहता से, डरते-डरते यह बात कही।।
शीला देवी थी सत्यनिष्ठ, सीता सावित्री से बढ़कर।
विष-बीज अंगूठी मैंने ही, रखी शैया पर ललचाकर।।

मेहता जब पहुँचा अग्रोहा, शीला-शीला कह वहाँ पड़ा।
लोगों ने पहिचान मिट्टी, जब हंस विराने देश उड़ा।।
चन्दन के रथ पर चढ़ी साथ, पति के संग ही उस लोक गई।
यों अमर सुहागिन हो जाना, नहीं बात यहाँ के लिए नई।

शीला-मेहता की प्रेम कथा, जो श्रद्धा सहित सुने गावे।
यह लोक और परलोक बने, शिवशंकर मन वांछित पावे।।

(जनवरी एवं फरवरी, १९९०)

जय-जय अग्र नरेश !

डॉ० शिवशंकर गर्ग

आओ बंधु, सभी अग्रजन, शोभा अग्र नरेश की।
इनको हम सब नमन करें, है बात यह इक ज्ञान की।।
जय-जय अग्र नरेश, जय-जय. . .

अग्रोहा के राजा हैं देखो, शोभा इनकी न्यारी है,
बेटे-बेटी सम ही इनको, प्यारे सब नर-नारी हैं।
बज रही नोबत इनके द्वारे, गूँज रहे नक्कारे हैं,
शीश धरे हैं छत्र और ऊँचे सिंहासन बैठे हैं।।

इनकी जय-जय एक संग बोलें, बात यह मान की।
इनको सब मिल नमन करें, है बात यह इक ज्ञान की।

राजधानी अग्रोहा इनकी, सब वैभव की खान थी,
इन्दुपुरी से भी सुंदर, भारत भू की शान भी।
'अग्र' नाम था उस जनपद का, लाखों जन संग रहते थे,
ईंट रुपया देकर दुःख में, बंधु-प्रेम वे रखते थे।

इतिहासों में अंकित बातें अग्रोहा की शान की।
इनको सब मिल नमन करें, है बात यह इक ज्ञान की।।

इनके वंशज बड़े गर्व से अग्रवाल कहलाते हैं,
वाणिज्य एवं व्यापार कार्य में अद्‌भुत क्षमता रखते हैं।
गोपालन और दया धर्म के सब नर-नारी पालक हैं,

गौत्र अठारह अखिल विश्व में, सत्य-अहिंसा साधक हैं।

नगर-नगर में अंकित गाथा, इनके त्याग-बलिदान की,
इनको सब मिल गमन करें, है बात यह इक ज्ञान की।

आगे जो रहते थे सबके, अब वे क्यों कमजोर हुए ?
पापिन फूट, दिखावा झूठा, से सब जन बरबाद हुए।
फूट मिटा कर एक रहो सब, छोड़ कुरीति रुढ़ि को,
यदि बनाना चाहते शक्तिशाली भावी पीढ़ी को।

सादा जीवन उच्च विचार हो, बात यही है काम की।
इनके आगे नमन करें हम, है बात यह इक काम की।।

(सितम्बर-अक्टूबर, १९९१)

अग्र संगम-पर्व

श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'

बने 'अग्रोहा' तीर्थ स्थान, विराजे अग्रसेन भगवान।
जावें अग्रजन परिवार, पावें दर्शन रूप महान।।

बहे ज्यों गंगा की धारा, संग यमुना का पावन जल।
मगन सरस्वती लहरें, हो संगम अग्रो का स्थल।।

तृप्त नैना करे अपने, सत्य हों मनवांछित सपने।
अग्रधर्म पुण्य पर्व जानें, सफल जीवन अपना कर लें।।

मिलन की बेला हो अनुपम, अग्र सब हो जायें समरस।
स्व का स्मरण हो सबको, भूलें मिथ्या यश अपयश।।

चलो सब प्रस्तुत हो जाओ, पूर्वज करते प्रतीक्षा।
देकर तन, मन, धन तीनों, लेनी उनसे अब दीक्षा।।

सुखी संसार बनाना है, भावना होवे सत निष्काम।
अतीत की स्मृतियाँ जागें, पुनः निर्मित हो स्वर्गधाम।।

खिले बगिया में पुष्प बसन्त, छेड़े भँवरे राग अन्नत।
नाचे मन मंगल मयूर, गावें गीत गुनों का कंत।।

कामना मन की हो पूरन, आश-विश्वास जगाना है।
प्रभु से ले आशीश 'मंगल'' (अग्र) संगम पर्व मनाना है।

(फरवरी, १९८८)

महाराजा अग्रसेन की वंदना

श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'

वन्दना प्रभु श्री अग्रसेन, संयुक्त हो करता समाज।
शत-शत प्रणाम आपको है, आशीष हमे दीजै महाराज।।
हम आपके ही वंशज हैं, वरदान दीजै हे वीर प्रवर।
मिलती रहे प्रेरणा प्रतिपल, सत्यपथ पर होवें अग्रसर।।
अग्र प्रवर्तक आप शिरोमणि, अग्र सन्तति नित गुण गावें।
ईंट रुपया की नीति ले, सह-अस्तित्व का भाव जगावें।।
दीन-दुःखी-असहाय जनों की, सेवा-धर्म-कर्तव्य बोध हो।
सच्चे समाजवाद प्रणेता, वाद तेरा सबको प्रबोध हो।।

बल, बुद्धि, विद्या ग्रहण करें, जीवन चरित्र से ज्ञान लहें।
मिलकर दें सहयोग दान, तन-मन-धन से त्याग करें।।
प्रेम-भाव सब में होवे, बन्धुत्व परस्पर भाव बढ़े।
जन-जन प्रीत प्रचार बढ़े, घर-घर रीति-रिवाज़ बढ़े।।
सब एक श्रृंखला बद्ध हों, सम्बन्ध परस्पर बन जावें।
अटूट प्रेम हो शुद्ध हृदय, भेद-भाव सब मिट जावें।।
अकर्मण्यता का चिन्ह हो, बनें सभी कर्मठ महान।
संकट सह लेवें हँस-हँस कर, ऐसे होवें सामर्थ्यवान।।

कण-कण में शक्ति का संचय, पौरुषता सब में जाग उठे।
स्वाभिमान पर रहें अडिग, शत्रु भी थर-थर काँप उठे।।
करें अनुकरण पूर्वजों का, सबके प्रति श्रद्धामान रहे।
रखें समाज की मर्यादा, निज देश की 'मंगल' आन रहे।।

(फरवरी, १९८९)

अग्रकुल ललनाओं से निवेदन

श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'

बढ़ चलो अग्रकुल ललनाओ,
लेकर हाथों में दीप शिखा।
अग्रदीप के प्रकाश पुंज से,
जगमग होवे दशों दिशा।।

नारी जीवन अति महान,
सर्व हितकारी तुम वन्दनीय।
अपनी शक्ति का परिचय दो,
सब रूप तुम्हारे पूजनीय।।

माँ देती शुभ आशीष दान,
बहिना गाती है विजय-गान।
पत्नी बन सुख संसार चले,
नारी देवी सर्व शक्तिमान।।

नारी ही कल्याणमयी,
नारी प्रेरणा शक्ति-दीप।
मंगल कामना लिये आज,
सतत जलें शुभ अग्रदीप।।

(दिसम्बर, १९८९)

होली की रोली

श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'

मेरे प्रिय, अप्रिय बंधुओ,
सभी से मेरा यथायोग्य नमस्कार और प्यार।
होली के रंगारंग त्यौहार पर,
भेज रहा हूँ अपने प्यार की रोली, तुम्हारे द्वार पर।।
लगाकर मस्तक पर इसका चन्दन, सामने रखना एक दर्पण,
फिर देखना कितने रंग भरे हैं इसमें,
क्या-क्या रंगों से बनी है यह होली की रोली।
अलग-अलग होते हुए नजर आयेगा,
केवल एक रंग करता हुआ रंगरेली।
उनका अपना-अपना अस्तित्व है, प्रत्येक का व्यक्तित्व है।
फिर भी एक रस में डूबे हुए,
एक ही रंग में झूमे हुए, मजबूत मस्त हैं।
मन और शरीर से स्वस्थ, अपने कार्य में व्यस्त हैं।।
सबकी अपनी भाषा, अपनी बोली, सभी हैं स्वच्छंद,
सबकी हमजोली, पाते हैं आनंद।
किसी भी अप्रिय रंग को प्रिय बनाना इनका काम है।।
ऐसा इनका सुनाम है।।
ऐसी है इनकी संगठन की शक्ति, परस्पर सद्भावना औ भक्ति।
दूसरा रंग इंन पर नहीं चढ़ता है, अपने ही ढंग से आगे बढ़ता है,
यह है स्वाभिमान, लोभ, मोह मद का तिरस्कार,
सबको प्यार, दुलार यथायोग्य सत्कार।
होली की रोली में है भरा,
बसुधैव कुटुम्बकम् की परम्परा।।

(अप्रैल-मई, १९९२)

अग्रोहा पद यात्रा हेतु

श्रीकृष्ण गोयल

नयी आशाएँ
नये विचार
पूर्वजों के धाम की ओर
कुछ पथिक चल रहे हैं।

शायद वो
आने वाले कल के लिए
एक इतिहास रच रहे हैं
एक संदेश है उनकी पग ध्वनि में
कि याद करो अपने पूर्वजों की धरती को
जिसने हमें पहचान दी है।

वे जा रहे हैं उस पावन माटी को
मस्तक पर लगाने
जिसने गौरव-गाथा लिखी है।

आपका भी फर्ज है उस धरती के लिए
जो माँ है हम सबके लिए।

दहेज-दानव

संजय कुमार गर्ग

कब तक बहुएँ जलेंगी, कब तक डोली लुटेगी,
कब तक इन हैवानों से बहू-बेटी जलेंगी।

देश का भाग्य फूट गया
बहू-बेटी का रिश्ता टूट गया
इन्सान-इन्सान को मार रहा
पति पत्नी को फूँक रहा
जिसने सात फेरे लगा के
अग्नि के सामने, कसम ना छोड़ने की खायी
उस पति का खून अपनी पत्नी पर
अत्याचार देख खौल जाता था
उस पति ने आज अपनी पत्नी पर
मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगाई।
कब तक इस बाज़ार में
दूल्हों की बोली लगेगी
कब तक अपने पति के हाथ
उनकी डोली लुटेगी।

इसलिए मैं आज अपनी आवाज़
हर युवा वर्ग तक पहुँचाता हूँ
कि वे कसम खायें
कि ना दहेज लेंगे और ना ही देंगे
तभी यह रोग खत्म हो सकेगा

यह 'दहेज' जड़ से मिट सकेगा।

सरकार को चाहिए
कि इन दहेज लोभियों, दहेज हत्यारों को
सीधा फाँसी पर चढ़ा दे।
अच्छा तो ये होगा
इन्हें भी इसी तरह
मिट्टी का तेल छिड़क कर
आग लगा दे।

('प्राकृतिक चिकित्सा विशेषांक,' अक्टूबर, १९९०)

हे अग्रसेन तुमको प्रणाम

सत्य प्रकाश 'बजरंग'

भारत माता के पुण्य पूत,
हे मानवता के अग्रदूत।
हे अग्रोहा के संस्थापक,
हे अग्रसेन तुमको प्रणाम।

जो ज्योति बने मानवता की
तुमने वो लिखे अमर लेख।
जो जागृति मंत्र बने युग की,
वो खेंची तुमने अमिट रेख।
अंकित युग के वक्षस्थल पर,
हे देव तुम्हारा पुण्य नाम।।

देकर समता बन्धुत्व भाव,
दुःखियों को तुमने दिये प्राण।
जाति को एकता मंत्र दिया,
वीरता गुणों से किया त्राण।
झुक कर आँधी तूफानों से,
तेरे चरणों को लिया थाम।।

तुम सिद्ध तपस्वी योग्य यती,
हे समरांगण की कीर्ति धवल।
यूनान सिकन्दर ने देखा,
तेरे पौरुष का सूर्य प्रबल।
तेरे गौरव के रथ की गति ने,
पाये न कभी दो क्षण विराम।।

(अक्टूबर, १९८७)

अग्र बन्धुओ उठो

श्रीमती सरोज गुप्ता

अग्र बन्धुओ उठो समय ने ली फिर से अंगड़ाई है,
पतित समाज उठाने हेतु नई चेतना आई है।
निकलो अब उस दलदल से,

जिसमें अब तक तुम फँसे हुए।
झूठे शान दिखाने के,
चक्कर में हो तुम धँसे हुए।
ध्यान लगाकर देखो तो,
निज जाति-गोत्र के भाई को।
नींद उड़ी जिसकी आँखों से,
कोस रहा मंहगाई को।

शादी क्यों व्यापार बनी है,
नहीं समझ में आता है।
हर बेटे का बाप भला क्यों,
पुत्र बेचना चाहता है ?
उसको आढ़त बना दिया है,
जो बहुत ही भावुक नाता है।
दो मन मिलते दो तन मिलते,
यह देख जिया हरषाता है।

लेकिन जब धन के लोभी कुछ,
इसमें रोड़ा अटकाते हैं।

नाजुक से इस रिश्ते को भी,
चाँदी से वे तुलवाते हैं।
उस समय हृदय रो उठता है,
लज्जा से सिर झुक जाता है।
हम अग्रसेन के वंशज हैं,
इस एक स्नेह का नाता है।

ऊँचे स्वर से बोलो नारा,
यह अग्रवंश है इक ही सारा।
हम उसका मान बढ़ायेंगे,
और कीर्ति-ध्वजा फहरायेंगे।
जयकार जगत में गूँजेगा,
भव अग्रसेन को पूजेगा।

(मई, १९८९)

आओ मिलकर करें सुधार

सुनयना गर्ग

अगर तुम साथ दो. . .
चलो चलें इक पावन धाम,
अग्रोहा जिसका प्यारा नाम।

अग्रसेन महाराज के दर्शन कर आयें,
और उनसे आर्शीवाद पायें।
कुल देवी लक्ष्मी का ध्यान करें,
हाथ जोड़कर उन्हें प्रणाम करें।

अपनी मातृभूमि का गान करें,
शक्ति-सरोवर में स्नान करें।
अग्रोहा धरती का हर टीला,
हम को ही पुकार रहा है।

पूर्वजों की इस भूमि की,
जय-जयकार कर रहा है।
दर्शन करके इस धाम का,
हो जाये हम सब का उद्धार।
हम सब अपनी मातृभूमि का,
आओ मिलकर करें सुधार।

(नवम्बर, १९८९)

भेद-भाव को मिटाइये

सुरेशचन्द जिन्दल

भाईचारा बनाके, भेदभाव को मिटाइये,
समाज के उत्थान हित अब तो आगे आइये।

पुकारता आज, हमको अग्रोहा हमारा,
एक ईंट एक रुपए की महानता
के उच्च भाव को पहचानिये।

दीन-हीन भी अंश है अपने समाज का,
उसे लजाकर ना वंश को घटाइये।
गिरे को उठाकर पिछड़े को बढ़ाकर,
उस महान आदर्श को पुनः दुहराइये।

यही पुष्पांजलि है, यही श्रद्धांजलि है,
घर-घर में चित्र महाराज जी का लगाइये।
नित्य पुष्पार्पित कर, दीपक जलाइये।
वैभव बढ़ेगा वंश का, वैभव बढ़ाइये।

कहाँ थे हम कहाँ हैं हम एक नजर डालिये,
क्यों हो रहा ये पतन कुछ तो विचारिये।
है विनती आपसे इक क्षण ऐसा निकालिये,
जिसमें श्री महाराज जी का नाम उच्चारिये।

इससे खोया हुआ हमारा स्वाभिमान जागेगा,
समाज में छुपा अन्धेरा दूर भागेगा।
लक्ष्मी पुत्र तुम ना कदम पीछे हटाइये,
यों बंद कर तिजोरी में ना माँ को लजाइये।

कविता लिखी नहीं जाती

डॉ० स्वराज्यमणी अग्रवाल

तुमने कहा है
एक कविता लिख दो।
शायद !
तुम्हें नहीं मालूम
कविता लिखी नहीं जाती
स्वयं लिखी जाती है।

वेदना !
जब अनुभूति की गहराइयों में
उतर आती है
वहीं से एक कविता
उभर जाती है
कविता लिखी नहीं जाती
स्वयं लिख जाती है।

कवि !
यूँ ही नहीं हुआ करते
बाल्मीकि की तरह
परायों के दर्द से
कल्पना को रंग देने वाले ही
कवि हुआ करते हैं।

यूँ तो जगती में

कवियों की कमी नहीं
किन्तु बाल्मीकि तो विरले
हुआ करते हैं,
कालीदास तुलसी की
प्रेरणा बनती हैं,
जिनकी अनुभूति,
केशव और गुप्त की 'चन्द्रिका' बनती है।

शायद, तुम जानते नहीं
कविता लिखी नहीं जाती
स्वयं लिख जाती है।

(दिसम्बर, १९९१)

जय-जय अग्रसेन हमारे

हरिशंकर (बमबम) अग्रवाल

नव शिशु सुन्दर प्यारे हो, अग्रसेन हमारे,
जय जय जय अग्रसेन हमारे।
आश्विनी तिथि एकम है नीकी,
ऋतु शरद हित है सबहीकी,
थल हरे वन सिर धारे हो,
अग्रसेन हमारे जय जय जय।

नगर अग्रोहा के नृप नामी,
सुत सम प्रजा पाल रत स्वामी,
सब विधि प्रजा सुखारे हो,
अग्रसेन हमारे जय जय जय।

तिनके भवन कुँवर सुकुमारे
मध्य दिवस जनमत भये प्यारे,
सुन्दरता लखहारे हो,
अग्रसेन हमारे हो जय जय जय।

शुचि सुन्दर सब नगर सजाये,
घर-घर बजे आनन्द बधाये,
जय जय सभी पुकारे हो,
अग्रसेन हमारे हो जय जय जय।

समय पाये नृप कुँवर बुलाये,

राज सिंहासन पर बैठाये,
नियम नृपति के न्यारे हो,
अग्रसेन हमारे हो जय जय जय।

गृह एक लाख राज में जिनके,
अतिथि नगर आ जावें जो इनके,
उन के काज सँवारे हो,
अग्रसेन हमारे हो जय जय जय।

अतिथि बराबर के कर डाले,
इतिहास में तुमहिं निहारे,
कवि इन पे बलि हारे हो,
अग्रसेन हमारे हो जय जय जय।

बम बम मण्डल हरि गुण गावें,
जन्म दिवस पर खुशी मनावे,
हरिशंकर तुम्हें निहारे हो,
अग्रसेन हमारे हो जय जय जय।

(जुलाई, १९९२)

अग्रोहा धाम

हरीश लोहिया

अ— अग्रोहा के धाम का, जग में हो उजियार।
ग— गली-गली हर गाँव में, गूँजे जय जयकार।।
रो— रोज लगे मेला यहाँ, जुड़े अग्र समुदाय।
हा— हालत बदले धाम की, पुण्य तीर्थ हो जाय।।
धा— धाम पुनर्निर्माण का, करें सभी संकल्प।
म— महिमा इसकी बने तभी, और न कोई विकल्प।।

कवि-परिचय

१. **अज्ञात कवि**	: पत्रिका में कवि के नाम का उल्लेख नहीं है
२. **अज्ञात कवि**	: पत्रिका में कवि के नाम का उल्लेख नहीं है
३. **अनन्त राम हलवाई**	: थाना (पश्चिम)
४. **अल्हड़ गोण्डवी**	: पटरंगा, बाराबंकी
५. **आशीष अग्रवाल**	: शिशुकवि, आयु आठ वर्ष, सी–७०२, वर्धवान नगर, मुलुण्ड (पश्चिम), मुंबई-८०
६. **उदय करण 'सुमन'**	: पता अनुपलब्ध
७. **श्रीमती कमला टांटिया**	: फतेहाबाद (हिसार)
८. **कल्याणमल गोयल 'झंडेवाला'**	: शांति निकेतन, सवाई माधोपुर (राजस्थान)
९. **काका हाथरसी**	: मूल नाम प्रभुलाल गर्ग, हाथरस
१०. **डॉ० केशव कल्पान्त**	: ४४, छत्ता स्ट्रीट, खुरजा (उत्तर प्रदेश)
११. **कृष्ण मित्र**	: राकेश मार्ग, गाजियाबाद
१२. **कृष्णमुरारी लाल अग्रवाल**	: फीरोजाबाद (उ० प्र०)
१३. **खुशहाल चन्द्र आर्य**	: कलकत्ता
१४. **गुणसागर शर्मा 'सत्यार्थी'**	: टीकमगढ़ (म० प्र०)

१५. **गुलाब खेतान** : पता अनुपलब्ध
१६. **गोपीराम कोकड़ा** : बम्बई

१७. **चन्द्रप्रकाश बंसल 'भारती'** : अजमेर

१८. **जगदीश अग्रवाल** : गोरेगाँव
१९. **ज्ञान चन्द गोयल** : बम्बई

२०. **डी० के० गर्ग** : हिसार

२१. **त्रिलोक गोयल** : अग्रसेन नगर, अजमेर

२२. **दुलीचन्द अग्रवाल** : कलकत्ता
२३. **दुली चन्द 'शशि'** : गोशा महल, हैदराबाद
२४. **देशबन्धु आर्य** : सूरत

२५. **नरेश कुमार गोयल** : तिगाँव, जि० फरीदाबाद
२६. **नारायणदास अग्रवाल 'वीर'** : पता अनुपलब्ध
२७. **प्रो० निडर** : दुर्गानगर, फिरोजाबाद

२८. **पी० पी० सिंगला** : ११०५, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, पानीपत

२९. **बाबूलाल** : छतरपुर (मध्य प्रदेश)
३०. **बी० डी० गुप्ता** : घाटकोपर (पूर्व), मुंबई

३१. **भरतकुमार जगदीश प्रसाद अग्रवाल** : बम्बई

कवि-परिचय

१. **अज्ञात कवि**	: पत्रिका में कवि के नाम का उल्लेख नहीं है
२. **अज्ञात कवि**	: पत्रिका में कवि के नाम का उल्लेख नहीं है
३. **अनन्त राम हलवाई**	: थाना (पश्चिम)
४. **अल्हड़ गोण्डवी**	: पटरंगा, बाराबंकी
५. **आशीष अग्रवाल**	: शिशुकवि, आयु आठ वर्ष, सी—७०२, वर्धवान नगर, मुलुण्ड (पश्चिम), मुंबई-८०
६. **उदय करण 'सुमन'**	: पता अनुपलब्ध
७. **श्रीमती कमला टांटिया**	: फतेहाबाद (हिसार)
८. **कल्याणमल गोयल 'झंडेवाला'**	: शांति निकेतन, सवाई माधोपुर (राजस्थान)
९. **काका हाथरसी**	: मूल नाम प्रभुलाल गर्ग, हाथरस
१०. **डॉ० केशव कल्पान्त**	: ४४, छत्ता स्ट्रीट, खुरजा (उत्तर प्रदेश)
११. **कृष्ण मित्र**	: राकेश मार्ग, गाजियाबाद
१२. **कृष्णमुरारी लाल अग्रवाल**	: फीरोजाबाद (उ० प्र०)
१३. **खुशहाल चन्द्र आर्य**	: कलकत्ता
१४. **गुणसागर शर्मा 'सत्यार्थी'**	: टीकमगढ़ (म० प्र०)

१५. गुलाब खेतान : पता अनुपलब्ध
१६. गोपीराम कोकड़ा : बम्बई

१७. चन्द्रप्रकाश बंसल 'भारती' : अजमेर

१८. जगदीश अग्रवाल : गोरेगाँव
१९. ज्ञान चन्द गोयल : बम्बई

२०. डी० के० गर्ग : हिसार

२१. त्रिलोक गोयल : अग्रसेन नगर, अजमेर

२२. दुलीचन्द अग्रवाल : कलकत्ता
२३. दुली चन्द 'शशि' : गोशा महल, हैदराबाद
२४. देशबन्धु आर्य : सूरत

२५. नरेश कुमार गोयल : तिगाँव, जि० फरीदाबाद
२६. नारायणदास अग्रवाल 'वीर' : पता अनुपलब्ध
२७. प्रो० निडर : दुर्गानगर, फिरोजाबाद

२८. पी० पी० सिंगला : ११०५, न्यू हाऊसिंग बोर्ड कॉलोनी, पानीपत

२९. बाबूलाल : छतरपुर (मध्य प्रदेश)
३०. बी० डी० गुप्ता : घाटकोपर (पूर्व), मुंबई

३१. भरतकुमार जगदीश प्रसाद अग्रवाल : बम्बई

३२. **मुंशीलाल अग्रवाल**	: अमरीकन ट्रांसपोर्ट, आगरा गेट, फिरोजबाद
३३. **डॉ० मोहनलाल गुप्त**	: ८३६, बी० जे० मार्ग, भायखला, मुंबई
३४. **मोहनलाल अग्रवाल**	: ग्राम मेदनीपुर (हाटी), जि० सतना
३५. **मोहनलाल एम० अग्रवाल**	: दाना बाजार, धुलिया (महाराष्ट्र)
३६. **कुमारी रजिया सुलताना**	: जनता चौक, कोटकपुरा
	अग्रवाल क्लॉथ स्टोर्स,
३७. **राघवेन्द्रलाल अग्रवाल**	: बलौदा बाजार (मध्य प्रदेश)
३८. **कुमारी राज गोयल**	: अध्यापिका, श्री रत्नमुनि जैन गर्ल्स इंटर कॉलेज, आगरा
३९. **राजेन्द्र अग्रवाल**	: २२६, कालबा देवी रोड, चेम्बर भवन, मुंबई-४०००० २
४०. **रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल**	: कटघोरा (म० प्र०)
४१. **रामेश्वर प्रसाद ताराचन्द**	: पो० कटघोरा (म० प्र०)
४२. **रूपेश बंसल**	: फिरोजाबाद
४३. **ललित कुमार अग्रवाल**	: १२०, अल्कापुरी, अलवर
४४. **विष्णु चन्द गुप्ता**	: १९१० / १४५, गणेशपुरा-ए, दिहली -११००३५
४५. **व्यास चन्द अग्रवाल**	: द्वारा ओमप्रकाश अग्रवाल, अधिवक्ता, बृहस्पति बाजार रोड, तिलक नगर, बिलासपुर (मध्य प्रदेश)
४६. **डॉ० शिवशंकर गर्ग**	: बसंत विहार, सीकर
४७. **श्रीकृष्ण अग्रवाल 'मंगल'**	: श्री अग्रसेन भंडार, पी-३५, कॉटन स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

४८. **श्रीकृष्ण गोयल** : शिवाजी गली, हिसार

४९. **संजय कुमार गर्ग** : इन्द्रलोक, हापुड
५०. **सत्य प्रकाश 'बजरंग'** : दिल्ली
५१. **श्रीमती सरोज गुप्ता** : १९२/१बरफखाना,गुडगाँव(हरियाणा)
५२. **सुनयना गर्ग** : हिसार, जब कविता लिखी तब कक्षा छठी की छात्रा थी
५३. **सुरेशचन्द जिन्दल** : आगरा
५४. **डॉ० स्वराज्यमणी अग्रवाल** : जीवनकॉलोनी,बलदेवबाग,जबलपुर-२

५५. **हरिशंकर (बमबम) अग्रवाल** : टीकमगढ़ (म० प्र०)
५६. **हरीश लोहिया** : हिसार

डॉ० कमल किशोर गोयनका
पीएच० डी०, डी० लिट्०

हिन्दी के प्रसिद्ध साहित्यकार प्रेमचंद के जीवन तथा साहित्य के अध्येता तथा देश-विदेश में प्रेमचंद विशेषज्ञ के रूप में विख्यात ; अभी तक कुल ३० पुस्तकें एवं ४०० लेख प्रकाशित ; अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन, कलकत्ता तथा अग्रवाल वैश्य बड़ी पंचायत, दिल्ली द्वारा सम्मानित तथा कई साहित्यिक पुरस्कारों से पुरस्कृत ; अब अग्रवाल समाज तथा अग्रोहा धाम, अग्रोहा (हिसार) के लिए लेखकीय सहयोग के लिए समर्पित ; सम्प्रति—दिल्ली विश्वविद्यालय के जाकिर हुसैन पोस्ट-ग्रेजूएट ईवनिंग कॉलेज में हिन्दी विभाग में वरिष्ठ रीडर।

नटराज प्रकाशन
दिल्ली-११००५२